

मैथिलीक चरिष्ठ रचनाकार  
कीर्तिनारायण मिश्रक ई चारिम  
कविता-संग्रह थिकनि। अपन पहिले  
काव्य-संग्रहसँ मैथिली काव्य-जगतमे  
सर्वथा बेछय कविताक कारणे ओ सदैव  
चर्चित रहलाह अछि। मैथिली कविता  
हिनक कविता लग आबि अपन उत्कर्षकें  
स्पर्श करैत अछि आ नव भाव-बोध, नव  
शिल्प-सौष्ठव, नव प्रतीक-योजना, नव  
उपमान-उपमेय आ अभिव्यक्तिक नव  
प्रणालीक कारणे अपन फराक अस्तित्वक  
स्थापना करैत अछि।

आधुनिक जीवनक विडम्बना-विद्रूप,  
जीवनक आपाधापी, जीवन पर आयल  
उपभोक्तावादक तेज खतरा आ तकर  
जबरदस्त हस्तक्षेपकें अपन कवितामे ओ  
अत्यन्त सतर्कतापूर्वक अभिव्यक्त करैत  
छथि। आम मनुखक बेहतरीक लेल  
हुनक कविता सार्थक चिन्ता आ विमर्श  
करैत अछि। ई चिन्ता आ विमर्श सदति  
हुनक चिन्तनमे रहैत छनि।

कीर्तिनारायण मिश्रक कवितामे  
मनक भीतरक तान-वितान, अन्तर्द्वन्द्व,  
मुक्तिक बेचैनी, सत्य-सुन्दरक आकांक्षा  
सँ भरल छटपटाइत चेतनाक एकटा प्रबल  
वेग, एकटा तेज प्रवाहक रूपमे रेखांकित  
कयल जा सकैत अछि। स्वानुभूतकें निज  
भाषा-शैलीमे एकटा पूर्ण आ परिचित  
परिसरमे निजता विस्तारित करैत अपन  
सार्थक उपस्थिति घोषित करैत अछि  
हुनक कविता।



पुस्तक प्राप्तिस्थान

- |  |   |
|--|---|
| <input type="checkbox"/> कीर्तिनारायण मिश्र<br>सौभद्र निवास<br>शोकहरा, बरौनी-851112<br>दूरभाष : 06279-232659 | <input type="checkbox"/> प्रो. डा. विश्वनाथ<br>सोमनाथ निकेतन<br>शुभंकरपुर, दरभंगा - 846006<br>दूरभाष : 06272-253979, 254366               |
| <input type="checkbox"/> शरदिन्दु चौधरी<br>शेखर प्रकाशन<br>इन्द्रपुरी, पटना-800024<br>दूरभाष : 0612-3102305  | <input type="checkbox"/> श्री राजनन्दन लाल दास<br>6/28 ए.सी.आई.टी. बिल्डिंग<br>16, बागमारी लेन<br>कोलकाता-700054<br>दूरभाष : 033-23349371 |
| <input type="checkbox"/> श्री केदार कानन<br>किसुन कुटीर, सुपौल-852131<br>दूरभाष : 06473-223739               |   |

- |  |   |   |
|--|---|---|
| <input type="checkbox"/> स्वत्वाधिकार  | : | कीर्तिनारायण मिश्र                                      |
| <input type="checkbox"/> मुखपृष्ठ      | : | सुस्मिता पाठक   |
| <input type="checkbox"/> प्रकाशक       | : | किसुन संकल्प लोक, किसुन कुटीर<br>सुपौल-852131, बिहार    |
| <input type="checkbox"/> प्रथम संस्करण | : | फरवरी, 2004   |
| <input type="checkbox"/> सहयोग राशि    | : | 50/-टाका (साधारण संस्करण)<br>100/-टाका (सजिल्द संस्करण) |
| <input type="checkbox"/> मुद्रक        | : | शिवांजलि प्रेस, सुपौल                                   |

**AADMI KEN JOHAIT** A Collection of Maithili Poems by  
Keerti Narayan Mishra

संजय - अर्चना

अजय - स्मिता

मन्नीषा - शैलेष

कै

सन्नेह



## समकालीन मैथिली कविताक साम्प्रतिक प्रवृत्ति

कोनो काल-खण्ड विशेषक कविताकेँ ओकर मूल प्रवृत्तिक आधार पर वर्गीकृत/विश्लेषित करब बड़ कठिन काज छैक। एहि कठिन काजक लेल बनाओल आधार-सिद्धान्त एवं विश्लेषण-पद्धति कतबो वैज्ञानिक आ प्रामाणिक हो, ओकर निष्पत्ति दोषमुक्त नहि भऽ सकैत अछि, ताहूमे, तत्व जे वस्तुगत नहि भावगत हो, आ ओहि भाव-प्रवाहकेँ देश-काल, सामाजिक व्यवस्था, तात्कालिक परिस्थिति, राजनैतिक एवं वैचारिक प्रतिबद्धता सभ प्रभावित/आन्दोलित कऽ रहल हो।

मैथिली कविताकेँ ग्राम-जीवनक सरलता, माटि-पानि, बन्धुत्व-भाव, पारस्परिकता, यथास्थितिक स्वीकार्यता, पैतृक संस्कार, पैतृक सम्पत्ति पर निर्भरता प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूपमे आइयो आकृष्ट करैत छैक। वैश्विकताक भाव ओकर महत्वाकांक्षा छैक, स्थानिकता स्वभाव आ शक्ति। किन्तु, एकर संगहि टूटैत ग्राम-जीवन, दड़कैत सम्बन्ध, अभावक आँचमे झड़कैत/विकृत होइत स्नेह-सौहार्द, बढ़ैत बेकारी, अपराधवृत्ति, भय, आतंक एवं असुरक्षा-बोध ओकरामे प्रतिहिंसाक भाव एवं आक्रोश जगबैत छैक। ओ गामसँ पलायन करैत अछि। मुदा जतय अछि, गामकेँ उधने जाइत अछि अथवा गाम ओकर पाछू लागल रहैत छैक। ओ सोचैत अछि-

शहर पचा नहि पाबि रहल-ए  
गाम अटा नहि पाबि रहल-ए  
शहरमे संज्ञाक संकट  
गाममे सर्वनाम सन हालति  
मतलब पूरा-क-पूरा व्याकरणे गड़बड़

पंकज पराशर (सर्वनाम)

ई द्वन्द्वपूर्ण मानसिकता ओकरा दू डेग आगाँक बाद एक डेग पाछाँ वला गतिशीलता दैत छैक। ओ चलैत रहैत अछि मुदा ततेक आगाँ नहि बढ़ि पबैत अछि। शहरक संघर्ष ओकरा असहज बनबैत छैक। असहजता पीड़ा तथा आक्रोशसँ भरि दैत छैक। ओ लड़ैत अछि आ परिस्थितिक अनुकूल अपनाकेँ ढारऽ चाहैत अछि। ओ टूटैत अछि, खण्ड-खण्ड होइत अछि मुदा अपनाकेँ जोड़ऽक प्रक्रियामे लागल रहैत अछि। अद्भुत जिजीविषा ओकरामे छैक। खतरा आ अनिश्चितता ओकरा विचलित नहि करैत छैक। आजुक व्यवस्थाक अंग शोषण एवं अमानवीयता ओकरा आतंकित नहि करैत छैक। तथापि, ओकर संघर्षशक्ति आ बुद्धि विवेक दुष्यक्रमे फँसल रहैत छैक। परिस्थितिक इएह विपरीतता एवं विडम्बना आजुक पीढ़ीकेँ उत्तराधिकारमे भेटल छैक-थोड़ेक आओर उग्र, थोड़ेक आओर पीड़ादायक, थोड़ेक आओर चुनौतीपूर्ण भऽ कए।



जे मनोदशा आ सरोकार छठम/सातम दशकक उपजीव्य छल, ओ आठममे आबि कए भ्रष्टाचार, निरंकुश शासन, आपातकाल आ सम्पूर्णक्रान्तिक तापसँ थोड़ेक कालक लेल गर्म भेल मुदा लगले सेरा गेल। आपातकाल आ सम्पूर्णक्रान्तिक पक्ष आ विपक्षमे टाढ़ होअए वला अधिकांश कवि अपन काव्य-विवेक पर प्रश्नचिन्ह लगवा कए, 'कुर्सी-क्रान्ति' देखैत रहि गेलाह। तात्कालिकता आ आवश्यकता पर अविचारित निर्भरता कविकेँ लोकप्रियता तँ दिआ सकैत छनि, स्थायित्व नहि। कहबी छैक, कवि भविष्यद्रष्टा होइ छथि मुदा यथार्थ ई अछि जे सुविधानुसार अपनाकेँ दृष्टिहीनो बना सकैत छथि।

नवम दशकक पूर्वोत्तर घटनाक्रान्त रहल। एहि अवधिक घटनाक्रम पर दृष्टिपात कएलासँ बुझाईत अछि जे सभ किछु पूर्वनियोजित छल आ सौँसे संसारकेँ मूक बनि विश्वपटल पर एहि घटाटोपकेँ देखैत रहबाक छलैक। पहिने ग्लासनोस्त (खुलापन/उदारीकरण) पछाति, पेरेस्त्रोइका (पुनर्गठन), फेर सोवियत संघक विघटन, समाजवादी विचारधारा पर साम्राज्यवादी विचारधाराक (आर्थिक/सैनिक/आणविक प्रभुत्व) आक्रमण, 'गैट', 'पेटेंट एक्ट'क माध्यमसँ भूमण्डलीकरणक रथ-यात्राक मार्गक प्रशस्तीकरण, सूचना-विस्फोट आ 'विश्वगाम'क अवधारणाक (महाबली मुखियाक सुविधाक लेल) प्रचार-प्रसार।

दोसर दृश्यमे - विकाशील/अविकसित/पछड़ल देशकेँ अस्थिर करबाक प्रयास, भेद-नीति, खुफिया-तंत्र, बाजारवादक विश्वव्यापी विस्तार।

परिणाम, भारतमे धार्मिक उन्माद, बाबरी मस्जिदक विध्वंस, अयोध्याकेँ अखहरा बना कए 'रामलला' केर मंचन, गोधरा काण्ड, बेस्ट बेकरी काण्ड, अक्षरधाम, कश्मीर विधान सभा आ भारतीय संसद पर आतंकी हमला।

सामाजिक असुरक्षा, जन-असंतोष, भ्रष्टाचार, घोटाला, राजनेताक आपराधिक चरित्र आ अपराधीवर्ग पर निर्भरता, बेरोजगारी, निरक्षरता एवं सिद्धांतविहीन राजनीति अपना देशकेँ 'अनाथ' आ नेतृत्वहीन सिद्ध कऽ देलक अछि। ओना, क्षत-विक्षत राष्ट्रीयताक 'रिपेयरिंग'क लेल राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय अनुबंध निर्गत होइत रहैत अछि।

मैथिलीक साम्प्रतिक कविता पर एहि अन्तर्राष्ट्रीय/राष्ट्रीय घटनाचक्रक सर्वाधिक प्रभाव पड़लैक किथेक तऽ मिथिला बिहारमे अछि आ बिहार अपना देशक सभसँ पछुआएल राज्यमे अछि। एहि ठामसँ प्रतिभा, बौद्धिकशक्ति एवं श्रमशक्तिक पलायन वेशी होइत छैक, ओ अपन अन्तः आ बाह्य पर दशक वेशी अनुभव करैत अछि।

एहि नव्यतम बोधक ग्रहणशीलता, प्रतिक्रियाशीलता, ओकर आत्मसातीकरण एवं ओकर रचनात्मक अभिव्यक्ति जँ एकमात्र नहि तँ मुख्य उपजीव्य छैक साम्प्रतिक मैथिली कविता केर।

पछिला एक-डेढ़ दशकमे चारि दर्जनसँ वेशी कविता-पुस्तक बहरायल अछि जाहिमे आधासँ बेशी ओहि स्थापित कविक पोथी छनि, जनिक अनेक संकलन पहिनहुँ छपि चुकल छलनि आ चर्चित-विश्लेषित होइत रहल छथि। नव संकलन सभ हुनका लोकनिक सर्जनात्मक नैरंतर्य आ काव्य-दृष्टिक विस्तारक परिचय दैत अछि, अपन रचनात्मक मोड़क कारण पाठक/आलोचककेँ

पुनर्विवेचनक पर्याप्त आधार दैत अछि।

एहि ओहिमे सोमदेव, धीरेन्द्र (आब स्वर्गीय), जीवकान्त, गंगेश गुंजन, भीमनाथ झा, उदयचन्द्र झा विनोद, रामलोचन ठाकुर, कुलानन्द मिश्र, उपेन्द्र बोधी, केशर कानन आदिक संग-संग एहि पांतिक् लेखकक काव्य-संकलन आवेल अछि।

एहि अवधिमे मैथिली साहित्यक शीर्षपुरुष श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क 'ओहि-पहोहि' एवं श्री गोविन्द झाक 'प्रलाप' तथा सुकण्ठ जनकवि श्री चन्द्रभानु सिन्हाक पहिल काव्य संकलन- 'स्वदेश-भारती', जाहिमे पारम्परिक शैलीमे युगीन बोध अभिव्यक्त भेल अछि, आयल अछि।

एकर अतिरिक्त गंगेश गुंजन, सियाराम झा सरस, नीरजा रेणु, शिवाकान्त पाठक, विनय कुमार मिश्र, दयाकान्त मिश्र, जगदीप नारायण चौधरी 'दीपक', शशिबोध मिश्र 'शशि' आदिक गीत, गजल व पारम्परिक कविताक संकलन तथा महाकाव्य सेहो प्रकाशित भेल। गंगेश गुंजन एवं सियाराम झा सरस अपन गीत/गजलमे वर्तमान विद्रूपता/पाखण्डकेँ शब्द आ स्वर देलनि अछि। शेष संकलन अतीतोन्मुख भावबोध/चिन्तनक परिचय दैत अछि।

एहि सम्पूर्ण परिदृश्य पर दृष्टिपात कएलासँ बुझाईत अछि, एक दिस अतीतजीविता, ग्रामाभिमुखता आ रागात्मकता प्राप्तवय एवं बहुत रास नवतूरक कविक पछोर नहि छोड़ि रहल छनि तँ दोसर दिस किछु प्रतिभावान एवं संघर्षशील युवा कवि जे गाम-कस्बा छोड़ि नगर-महानगरमे आबि गेल छथि, निर्मम मशीनी जीवन, असुरक्षा बोध एवं अनिश्चित भविष्यक कारण काल्पनिकता/आत्मीयता/प्राकृतिकता/निश्चिन्ताक बाट, आजुक पूर्णतः बदलि गेल गाममे जोहैत छथि।

प्रत्येक रचनाकारक अनुभूतिक अपन परिधि होइत छैक, ओकर परिस्थितिक रंग होइत छैक एवं भूत-वर्तमान-भविष्यकेँ देखबाक फराक दृष्टिबिन्दु होइत छैक। उपरिचर्चित पूर्वराग एवं उत्तररागमे विपुल रचना भेल अछि। रचनाकार कतेक सजग छथि, हुनक आत्मरागमे आत्मान्वेषण आ आत्मसंघर्षक कतेक परिणाम छनि, युगीन परिस्थिति कोन रूपमे समाहित छनि, कतेक जन-सापेक्षता छनि, ई रचनाकार आ पाठक दुनूक लेल अन्वेषणक विषय, दुनूक लेल महत्वपूर्ण। कोनो रचना, कोनो विचारधारा, कोनो अवधारणाकेँ सोझे खारिज नहि कैल जा सकैछ, कविक स्वायत्तता पर प्रश्नचिह्न नहि लगाओल जा सकैछ किन्तु ओहिमे समय, समाज, साहित्य एवं सत्यक अन्वेषण तऽ कैल जा सकैत छैक।

साहित्यमे व्यक्तितंत्र, भावनात्मक एकाधिकारवाद एवं विचार तथा पद्धति-विशेषमे लिखल साहित्य अथवा विचारगत प्रतिबद्धताक वर्चस्व-स्थापनक प्रयास समय-समय पर होइत रहल अछि। अतिरेकवादी भावोच्छ्वासकेँ साहित्य बूझल जाइत रहल अछि। एहना स्थितिमे रचनाकार द्वारा आत्मानुशीलन एवं पाठक/आलोचक द्वारा रचनाक अन्तःपरीक्षण दुनू आवश्यक।

बहुवर्णिता, बहुधर्मिता, बहुध्वन्यात्मकता एवं बहुसांस्कृतिकताक अन्तर्वस्तु



भारतीय काव्यप्रतिमाकेँ रूपाकार देने अछि। मैथिली कविता अपेक्षाकृत छोट भौगोलिक/आकृतिक सीमामे एहि विविधतामय अखिल भारतीयतामे अपन सहभागिताक प्रति सजग रहैत अछि।

मैथिली कवितामे 'चित्रा' सँ जे प्रवाह-दिशा बदलल छल, ओकरा आओर गतिशील, आओर समाजोन्मुख, आओर जन-सापेक्ष बनयबामे साठोत्तरी पीढ़ीक प्रायः अढ़ाई/तीन दशकक लेखन एवं ओहि अवधिमे चलाओल गेल काव्यान्दोलनक महत्वपूर्ण भूमिका रहलैक अछि। आजुक अधिकांश ख्यातनामा कवि, कथाकार, उपन्यासकार, चिंतक एवं आलोचक ओही खाड़ीसँ अबैत छथि। मैथिली साहित्यकेँ साहित्यक अखिल भारतीय प्रतिस्पर्धामे प्रतिष्ठापूर्ण स्थान दिअबामे एहि पीढ़ीक ऐतिहासिक योगदान अछि।

परवर्ती पीढ़ीक समक्ष बीसम शताब्दीक सर्वाधिक त्रासद एवं चुनौतीपूर्ण परिदृश्य रहलैक। उदारीकरणक आवरणमे बाजारवाद, सोवियत संघक विघटनक बाद अमेरिकी वर्चस्वक आतंक, साम्राज्यवादी शक्तिक समाजवादी विचारधारा पर आक्रमण आदि। युवाकविक तीक्ष्ण दृष्टि सभ पर पड़ल अछि। संवेदनहीन अभियान द्वारा मनुष्यकेँ विकल्पहीन, संदेहशील, निर्जीव आ निरुपाय बनयबाक असली अभिप्रायकेँ बूझैत ओ जे भावनात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त कयलनि अछि, ओ हुनक काव्य-विवेकक परिपक्वताक परिचायक थिक, काव्य-प्रवाहकेँ युगीन सत्य दिस मोड़बाक प्रयास थिक, काव्य प्रवृत्तिकेँ नव दिशा देबाक उपक्रम थिक।

साहित्यकेँ संजीवनी भेटैत छैक नवका पीढ़ीक सृजन-सजगतासँ। समकालीन मैथिली कवितामे अपन सतेज भूमिकाक लेल अनेक कवि उल्लेख्य छथि। एतय ने सभ भर विस्तारसँ चर्चा संभव, ने उदाहरणस्वरूप किछु काव्य-खण्डकेँ राखि ओकर विश्लेषण। मात्र नामोल्लेख करब न्याय संगत नहि हैत। तथापि किछु पुस्तकक नाम गनायब आवश्यक।

'आब आगो सुनू' (कुलानन्द मिश्र), 'यंत्रणाक क्षणमे' (उपेन्द्र दोषी) (दुनू वरिष्ठ कवि आब स्वर्गीय भऽ गेल छथि), 'लाख प्रश्न अनुत्तरित' (रामलोचन ठाकुर), 'नेहाइ पर स्वप्न' (विभूति आनन्द), 'मिझायल सूर्यक नगर' (कुमार मनीष अरविन्द), 'चानन काजर' (देवशंकर नवीन), 'अंगना एकटा आग्रह थिक' (नारायणजी), 'पांगल गाछक छाहरि' (फूलचन्द्र झा 'प्रवीण'), 'धारक ओइ पार' (जगदीशचन्द्र ठाकुर 'अनिल'), 'पराती जकाँ' (विद्यानन्द झा)। उपर्युक्त काव्य संकलन सभसँ मैथिली नवकविता आओर समृद्ध भेल अछि आ भारतीय काव्य-साहित्यकेँ श्लाघ्य योगदान भेटलैक अछि।

एहि मध्य समकालीन कविताक क्षेत्रमे एकटा नव नाम अपन काव्यगत आ शिल्पगत वैष्टिक कारण पाठकक ध्यान आकृष्ट कैलक अछि। ओहि कविक नाम अछि विवेकानन्द ठाकुर आ काव्यकृतिक नाम 'एकसरे ठाढ़' एवं 'चानन घन गच्छिया'। मैथिलीमे प्रायः जन्मवर्षक आधार पर समकालीन-प्राचीन, नव-पुरानक वर्गीकरण होइत रहल अछि। किन्तु किरण, यात्री, किसुन आ आब बहत्तरवर्षीय विवेकानन्द ठाकुर, अद्यतन बोधक रचना लिखि अपन वयसकेँ नकारलनि अछि।

आसिद्ध कैलनि अछि जे रचनाकारकेँ वय नहि, बोध पुरान अथवा नवीन बनबैत छैक।

विद्यानन्द झाक पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित कविता, भाव आ शिल्प दुनू युक्तिमे, नव्यबोधक परिचय दैत रहल अछि। एम्हरे हुनक काव्य-संकलन 'पराती जकाँ' प्रकाशित भेल छनि। अपन कविता- 'राति एक टा यातनागृह'मे ओ लिखैत छथि-

हमर भीतर/एकटा जहलखाना अछि/जाहिमे बन्न अछि/हमरे कैक टा अंश सब/रोज राति भोकैत रहैत अछि भाला/गत्र-गत्रमे/आ शोणित शोणिताम/छटपटाइत रहैत छी।

रैसमक कीड़ा जकाँ आजुक मनुष्य अपना लेल स्वयं जाल बुनैत अछि आ ओहिमे फँसैत-धँसैत अपन अस्तित्वकेँ समाप्त कऽ लैत अछि, अपन-अपन जहलखाना स्वयं बनबैत अछि आ ओहिमे कैद रहि समाप्त भऽ जाइत अछि।

हरेकृष्ण झा विखण्डित होइत विश्वास आ निष्पंद होइत मानवीयताकेँ 'कियैक मुदा एहिना'मे जोहैत सौन्दर्यक शुभंकर सनेसक संभावना पसाहियोमे देखैत छथि-

जखन ई भुवन होइत रहैत अछि लहालोट/बिलहैत सौन्दर्यक शुभंकर सनेस/कोना लगैत अछि पसाही सभक नस-नसमे/एक-दोसरक लेल/चमकैत अछि भालाक नोक कोना/सभक एकेक टा धड़कनमे?

डा. शिवेन्द्र दास प्रगतिशील सोच आ जुझारु प्रवृत्तिक कारणे समकालीन मैथिली कविताक एक महत्वपूर्ण नाम छथि। आइ सम्पूर्ण देशक जेहन वातावरण बनल अछि, जतेक प्रकारक अन्याय-अत्याचार सभतरि पसरल अछि, तकर निचोड़ हिनक कवितामे एहि तरहें व्यक्त भेल अछि-

हुनक कहब छनि जे/हिनक दलीलमे दम छैक/हुनके दलीलक दम पर देश प्रगतिशील छैक/ई सभ नकारि देने छथि अयना/भूख, लू, ठंढ, बाढ़ि, बिमारी आ बलात्कारसँ/भेल मृत्युक/ई सभ षड्यंत्रजनित प्रचार करैत छथि/इमानक बोझ तर हाँफैत, हाहाकार करैत/लोक एखनो बचल छैक-एकरा/ओ बरगलायब कहैत छथि/हमर ई मित्र सभ/कोनो प्रकारक हिंसाक विरुद्ध छथि/नतमस्तक गारि सुनैत गरदनिकेँ/कनिको टा तनिते/ई गरदिनि उतारबाक तैयारी शुरू कऽ दैत छथि।

(हमर विरोध)

कोसीक उपेक्षित-दलित-पीड़ितक मौन-व्यथाकेँ अपन स्वर दैत प्रगतिशील आ नवताक पक्षधर कवि डा. नवीन कुमार दासक कवितामे जनमानसक पीड़ाक कतेक सम्वेदनशील अभिव्यक्ति भेल अछि, तकर एक उदाहरण देखल जाय-

बहरिया लोक एतय नहि अबैछ/चुनाओ समयोमे नहि/वोट होइत अछि-सुनैत छी नाहे पर/नहि, कतहु आनठाम जयबा लेल/नहि होइत अछि तैयार ई सभ/कियैक तँ छिन्न होइत नदीक संग/छिन्न होइत जाइत अछि चिन्ता...

जीवनक प्रति आद्यन्त आस्था आ विश्वास डा. नवीनक कविताकेँ



विशिष्ट बनबैत अछि- आँगनमे सूखैत अछि रिलीफक गहूम / आ दोसर-टाट-खढ़-छप्पर धरि पसरि जाइछ जिनगी / घून जकाँ / सूखल खधाड़िसँ मारि अनैत अछि नेना सभ । पोटी, गरइ, चेंगा आ काँकोड़ / जखन पकाओल जाइछ आगिमे / तँ उबकाइत सोहारिक स्वादकें जीति लैत अछि ।

(कोसीक बालु जकाँ जीवन)

प्रगतिशील विचारधाराक प्रतिभासम्पन्न कविक रूपमे कृष्णमोहन झा अपन स्थान बनौलनि अछि । शब्द आ शिल्प चयनमे हुनक निष्णातता हुनका महत्वपूर्ण बनबैत छनि । अपन भावकें सोझ-सरल शब्दमे राखि ओ प्रभाव उत्पन्न करैत छथि । 'एकटा गाछक यात्रा-वृत्तांत' तथा 'अहाँकें केओ सोर करैए' हुनक सहज अभिव्यक्तिक उदाहरण प्रस्तुत करैत अछि ।

तहिना रामचैतन्य धीरज बुद्धक निषेधमे सर्जनाक उन्मेष जोहैत विचार-कविताक कविक रूपमे अपनाकें प्रतिष्ठित करैत छथि । एक टा बानगी-

हमर मनुक्ख / सचेत / देखैत अछि / प्रलयी नर-समुद्रमे / उठैत तूफान / मनुक्खक दलाली / दलालक चारुकात / अत्यन्त कमजोर अछि / सभटा बन्हन / कर्मकाण्ड मजगूत होइत / चलि जा रहल अछि / ई बुद्धक मरैक नहि / जगबाक खबरि थिक ।

(बुद्धक मरैक नहि, जगबाक खबरि)

कवि रमेश अपन पीढ़ीक कविमे सबसँ फराक आ बेछप पहिचान बनौलनि अछि । हुनक नजरि मिथिलाक गाम-घर, कोसी-कमला, बाढ़ि-सुखाड़ि, बेकारी-भूखमरीसँ लऽ कए तरेगन-युद्ध, ग्लोबल षड्यंत्र, विश्वग्रामक बाजारवाद, कम्प्यूटर-संजाल, आर्थिक साम्राज्यवाद, विकासक नाम पर पसरैत / पसारल जाइत अपसंस्कृति-सभ पर रहैत छनि ।

पहिने तरेगन-युद्धक माला जपिकऽ अहाँक उत्तेजनाकें सय डिग्री सेल्सियस धरि पहुँचा देत / अहाँ दुनू सहोदरकें पितिऔत बना देत / अहाँ दुनू भैयाही जखन एक दोसरसँ, ओलि सधेबाक व्योतमे लागल रहब, ओ अपन मनोनुकूल समझौता लेल एक टा रोबोटकें शान्तिदूत बनाकऽ पठाओत । ओ अपन चौर उपग्रह द्वारा अहाँक रणनीति आ नक्सा चोरा लेत । फेर तँ हथियार, कम्प्यूटर आ रोबोट ओकर । अहाँक माथ जीह आ कलम ओकर । तखन ओ अहाँक बेटीकें अपन देशक नागरिक बनाकऽ अन्तरिक्ष यात्राक कल्पनाक उन्मादसँ बोरि दैत । अहाँ विकास-दर-वृद्धि, मृत्युदर, महंगी, विनाश आ मुद्रास्फीतिक चढ़ा-उतरीमे अपस्यांत रहब जहिया, भिनसरे-भिनसर अहाँक अङ्गनामे अन्तरिक्ष मानव उतारत तहिया ।

(दिशांस लागल उका-पतङ)

हुनक कविताक गद्यात्मक शैली एवं शब्द-विन्यास मैथिली कविताक परिधिक विस्तार करैत अछि ।

आजुक बदलल / विकृत होइत परिस्थिति एवं संस्कृति पर उत्पन्न खतरासँ पलायन नहि मोकाबिला आवश्यक छैक । पंकज पराशर एहि 'दिशाभ्रम'कें तोड़ि सुनिश्चित दिशा तय करऽ चाहैत छथि, एकटा नव इतिहास गढ़ऽ चाहैत छथि-

विकल्प हमरा लग कम अछि आ / इतिहास ओखि गुहारि रहल अछि / मुदा यात्रा स्थगित कयल जयबाक सुझाव आब निरर्थक अछि / हे हमर पिता / हम अगर दिक् लागलासँ भुतिआइयो जाइ / वा अदृश्यताक डरें डेराइयो जाइ / तँ पुत्रमोहमे यात्रा स्थगनक प्रस्ताव अहाँ नहि देब / देब मात्र शुभकामना कि हम कऽ सकी पूर्ण अहाँक अपूर्ण यात्रा ।

(दिशाभ्रम)

नयका पीढ़ीक अधिकांश कवि जकाँ विनय भूषणक कोनो कविता-संकलन नहि छपल छनि किन्तु पत्र-पत्रिकामे छिड़ि आयल हुनक कविता सभ संघर्षशील मनुष्यक दुर्घर्ष संकल्प-शक्ति आ युयुत्साक इतिवृत्त प्रस्तुत करैत अछि । ओ आजुक अन्धकारमे घर्षण उत्पन्न कऽ मनुष्यक लेल प्रकाशक चिनगी बहार करऽ चाहैत छथि, अन्हरिया आ डेराओन सपना पर प्रकाश आ यथार्थकें विजयी बनाबऽक लेल, हंता आ दुश्मनक प्रतिकारक लेल, ओरिआओनमे लागल रहैत छथि-

एहि संदेहक सियाह अन्हारमे / बुझाइ छैक सभ / हंता आ दुश्मन / हम बेलल्ला भेल / औनाइत रहै छी / कोनो चिनगीक लेल / हम दोड़ैत / आगू बढ़ैत जाइत छी / एहि सियाह अन्हारमे / जोगने रहै छी / छातीमे / असंख्य डेराओन सपना ।

(संदेहक सियाह अन्हारमे)

उत्तरोत्तर जटिल होइत विश्वव्यवस्थामे मानवीय संवेदनाक निर्जीवीकरण भऽ रहल छैक, लोक सुखक लालसामे निर्जीव साधनक मकड़जालमे फँसि स्वत्व आ सहजता हेरा रहल अछि । स्वविवेक आ स्वनिर्णयक अधिकारसँ वंचित भऽ रहल अछि । बढ़ैत आन्तरिक दरिद्रता ओकरा निरुपाय / निस्सहाय बना रहल छैक । रमणकुमार सिंह एहि निर्जीवीकरणक पीड़ाकें अपन 'निर्जीव' कवितामे अभिव्यक्त केलनि अछि-

अपन अतिरिक्त आकर्षणमे कहियो काल / हमरो सभकें बना दैत अछि निर्जीव / मोन होइत अछि जे कोनाहितो / बचि जाइ निर्जीव हेबासँ / बेजायकें बेजाय कहि कऽ सकी विरोध / नीक गपक पक्षमे भऽ सकी सहमत / हँसि सकी फूल जकाँ निर्दोष हँसी / आ बचा ली थोड़े समय मित्र आ परिवार लेल / मुदा कहाँ कऽ पबैत छी हम एना / बौआइत रहि जाइत छी निर्जीवक अतिरिक्त आकर्षणमे ।

सौंसे पृथ्वी पर विकासक नाम पर विनाशक जाल पसारऽक मंशा राखऽ वला अणु-आयुधसम्पन्न देश पृथ्वीक रक्षाक स्वांग रचैत गरीब देशकें पृथ्वी पर आगत खतराक लेल जिम्मेदार मानि घोल करैत रहैत अछि । अजित कुमार आजाद ओकरा बरजैत लिखैत छथि-

धम्हू बटोही कनेक आर धम्हि जाउ / एखन जुनि तोड़ियौक पृथ्वीक निन्न / युग-युगान्तसँ थाकल पृथ्वीकें / कनेक आर सुस्ताबए दिऔ / पुलकित होअए दिऔ बसातकें / एहि छोड़ी सभकें / जीबि लेबए दियौ कनेक आर जीवन ।

(सुस्ताइत अछि पृथ्वी)

दुष्चक्रमे फँसल पृथ्वी पर निरन्तर अन्धकार, संदेह एवं द्विविधा पसारि



जन-मानसकें भय आ आतंकसँ ग्रस्त कए ओकरा आओर त्रस्त करबाक लेल नित नव हथियार गढ़ल जाइत अछि। आहटिकें अकानैत लोकक निन्न हेरायल रहैत छैक आ ओ आजीवन भोरक आकुल प्रतीक्षा करैत रहैत अछि। एहि मनोदशाक जीवन्त चित्र सुस्मिता पाठकक निम्नलिखित पंक्तिमे भेल अछि-

कखन कोन राति क्यो गढ़त हथियार / सर्द चुप भेल मृत राति / आ सन्देहास्पद आहट / ठक्-ठक् के विरुद्ध / कि भोर कखन हैत / कखन हैत भोर।

(कखन होयत भोर)

उपर्युक्त उद्धरण सभक काव्य-विषय आ कवि-चिन्ता मैथिलीक समकालीन कविताकें अपन व्यंजनामे माटिपानिसँ सम्पृक्त राखि अनन्त आकाश वला विस्तार दैत विश्वजनीन बनबैत अछि। हमरा जनैत कोनो जाग्रत भाषाक साहित्यक इएह काम्य होइत छैक। आजुक कवि आ कवयित्री दुनूक भाव-तरंगमे हमरा विलक्षण सहगामिता भेटैत अछि। दुनूमे तथाकथित वैश्वीकरण, बाजारीकरण आ उपभोक्तावादी मानसिकताक प्रति समान चिन्ता, समान आक्रोश, समान आक्रामकता। कवयित्री सुस्मिता पाठकक संगे ज्योत्स्ना चन्द्रम एवं कामिनीक निम्नोद्धृत काव्यांश देखब प्रासंगिक-

ओ फूल देखै / नागफनीक / ओ गति देखै प्रक्षेपास्त्रक / ओकर हाथमे खेलौना होइ / रोबोट... रिमोट... / ओ खेलाए / इन्टरनेट / ओ नहाए / साइबर कैफे / ओ सोचए / जे एखन धरि नहि सोचल गेल रहै...

मने, तिरोहित भऽ गेल रहै / ओकर मोनसँ जेना / नवयौवनाक कोमलता / आ माधुर्य / आ उछाह / आ... आ / तैं नहि अबै / ओकर स्वप्नमे कोनो राजकुमार।

बएसक एक समय-सीमा धरि अबैत / एहि तरहक भावनाक / आ कामनाक निरर्थकताकें / रेखांकित करैत / ओ स्वप्न देखै कोनो राजकुमारक नहि / ओ स्वप्न देखै / अपन अन्दरसँ अंकुराईत / कोढ़िआइत / भकरार जन्म भेल फुलाइत / आर्थिक रूपसँ सम्पन्न एक नारीकें।

ज्योत्स्ना चन्द्रम (ओकर जहिया जन्म भेलै)

आइ देह बेचनाइयो फैशन भऽ गेल / आ देह खरीदनाइयो / धर्मक जे मोट चादरि / ओढि लेने छल लोक / आधुनिकताक बिड़रो / उड़ि गेल ओहो... / कोनो सभा भवन / कोनो मंदिर सेहो / सभ जगह / स्त्री इस्तेमाल भऽ रहलैयै / छूरी आ काँटा जकाँ एक रंग।

कामिनी (आरंभ-30)

नवका पीढ़ीमे एकटा आओर नाम-अमरनाथ झा 'भारती' अपन सतेज रचना-दृष्टिक कारण चर्चामे आबैत रहैत छथि।

एकैसम शताब्दीक कविताक लेल परिवेश, परिस्थिति, चुनौती आ काव्य-विषय पछिला शताब्दीसँ सर्वथा भिन्न छैक। अपसंस्कृति, भ्रष्टाचार, राजनैतिक प्रदूषण, जन-विमुखता आ लोक-कल्याणक भावनाक लुप्तता, व्यक्ति आ राष्ट्रक आत्मसम्मान पर आसन्न संकट सभ मिलि कए आजुक काव्यचेतनाकें उद्बलित कए ओकरा प्रतिकारक मुद्रामे ढाढ़ कऽ देने छैक,

अतीतक पुनर्जागरण करऽ लेल बाध्य कऽ देने छैक, नव प्रतीक, नव विम्ब, नव आकाशनाक सृष्टिक विवशता उत्पन्न कऽ देने छैक।

कविताक वर्तमान स्वरूप आ संभावित जटिल रूप सम्प्रेषणक मार्गकें आओर पुर्ण बना दैतैक, पहिनिहिसँ आबि रहल संप्रेषणीयताक संकट उत्तरीतर गंभीर बनौने जयतैक।


एहन स्थितिमे कवि आ पाठक दुनू केर दायित्व बढ़ि जाइत छनि। कविकें अपन जटिल भाव आ विचारक अभिव्यक्तिक लेल प्रतीक, लोकवृत्त आ विम्बकें अधिकाधिक जन-अनुमेय बनाबऽ प्रयास करऽ पड़तनि आ पाठककें आजुक विडम्बित एवं जटिल परिदृश्यकें ध्यानमे राखि भाव आ विचारक अन्तर्वस्तु धरि पहुँचबाक लेल काव्यास्वादनक परम्परागत पाठ-विधिकें वर्तमान युगबोधक अनुकूल परिवर्तित / विकसित करऽ पड़तनि। काव्य-रचना आ काव्य-आस्वादनक एहि शीर्षासनसँ तत्काल रसास्वादन बाधित होतैक, पाठकक संख्या घटतैक एवं लोक-रंजनमे कमी अयतैक। किन्तु काव्यक धर्म मात्र मनोरंजने नहि मनोन्नयनो छैक।

एहि अर्थमे पाठसम्बन्धी तात्कालिक अवरोध अथवा असुविधाकें बिसरि, बोध-विस्तारसँ भविष्यमे होअए वला आत्मलाभ एवं कविताक परिधि-विस्तारक बात सोचबाक चाही।

वर्तमान विश्वव्यवस्था तथा वस्तुक संग-संग भाव, विचार आ संस्कृतिक वैश्वीकरणक निहितार्थकें बूझैत नवका पीढ़ी जाहि प्रतिरोधात्मक तेवरक संग संभावित भविष्यक दिस उन्मुख अछि, सूचना / प्रौद्योगिकी / बाजारवाद / उपभोक्तावादक मानवीय संवेदना पर पड़ऽवला प्रभावक संज्ञान लैत / सृजनरत अछि, अपन जटिल भावक अनुकूल भाषा आ शिल्पक अन्वेषणमे रत अछि, आगामी कविताक प्रवृत्ति-निर्धारणमे मुख्य भूमिका निबाहत। रमेश, पंकज पराशर, विनय भूषण, रमण कुमार सिंह, अजित कुमार आजाद, मधुकांत झा आदिक कविता एहि दिशामे आश्वस्त करैत अछि। □

शोकहरा (बरौनी)

14 जनवरी 2004

  
14.01.2004



### रचना-क्रम

समकालीन मैथिली कविताक साम्प्रतिक प्रवृत्ति/7

आदमीकेँ जोहैत/17

सागर/18

हृदय तलसैँ हजारक मीटर ऊपर/20

घौबटिया/23

चल भाइ चल/24

मुक्त कुन्तला अमावस्या/25

घऽरो लगैत अछि डेराओन/26

चिन्ता जुनि करह बाउ/27

ओ सभ की जानऽ गेल/28

एहि अरण्यमे/29

कालाहाँड़ी/30

स्नेहवत्सला गोस्तनी/31

सन्धिपत्र/33

ओ जहिया आयल छल गामसँ/35

जाइक ओहि दुपहरियामे/36

अहाँ कोम्हर नुका गेल छी प्रभासजी/38

अहाँ विदा भऽ गेलहुँ यात्रीजी/40

के थिकेँ तौ/42

रोज भोरमे/44

रूसाफुल्ली/45

प्रियंवद/46

स्वप्नजा अनिन्दिता स्मिता/47

सर्वमंगला सी.टी.बी.टी./48

झुनझुनावाला/50

भरघट बनल मएदानमे/52



एनम् छिन्दन्ति शस्त्राणि, एनम् दहति पावकः/53

निन्न/54

ओ आ हम/55

गिल्लू/56

रागशून्य ग्लोबल हृदय/57

एकटा अकर्मक कविता/59

धोधरिसँ हुलकी मारैत करुणा/61

रिनियाकेर नोर/62

गुड़िया संग गुड़िया जकाँ खेलाइत/63

ओ जनमि गेल छथि/64

उत्तरआधुनिक कारुणिक/66

साइबर कैफे/67

ठेहिआयल क्षणमे/68

हवाक विरोधमे/69

इयोढ़क माछ/71

वाणी केर वध/72

सहचरी/73

जाइक रौद/74

कामनाक अर्ज/75

ओकरा रहैक समय/76

हमरा अछि चिन्ता/77

मिथिलासँ बाहर मिथिला/78

यू.एन.ओ.मे यात्रीजीकेँ स्मरण करैत/80 □

## आदमीकेँ जोहैत

तम जोहि रहल छी

कन्दरा गुफा खंडहरमे आदमीक असल रूप  
कतेक कठिन भऽ गेल अछि ओकरा चिन्हव

ओहुना

ओकर परिचय कहियो सहज नहि छल

जहिया अस्तित्व छलैक

ओ चिन्हल नहि गेल

आब नहि छैक

तँ सभतरि जोहल जा रहल अछि

लोक कहैत अछि

पहिने ओ सिक्कामे बदलि गेल

फेर खजानाक रस्तासँ

आकड़ाक शिखर पर पहुँचि

आजुक संगणनक बनि गेल

आब ओ मात्र गनती करैत अछि

कखनहुँ साँस

कखनहुँ नाडीक गति

कखनहुँ हृदयक स्पन्दन गनैत अछि

करैत अछि

अपन यांत्रिक विवेकसँ

अंक-विमुख लोकक

मृत्युमुखी होयबाक घोषणा

किन्तु ई आदमी जकाँ लगैत

कृत्रिम संवेदनवला जीव

आदमी तँ नहि भऽ सकैत अछि

कतेक आवश्यक भऽ गेल अछि

हमरा लेल

कन्दरा गुफा खंडहरमे बीआयव

आ जोहैत रहब

ओहि जीवक अवशेष

जे कहियो आदमी कहाइत छल □

अंतिका : जुलाई-सितम्बर 1999

आदमीकेँ जोहैत/17



## सागर

सागर

हमरा सूतऽ नहि दैत अछि  
ठीक ओहिना  
जेना छोट वयसमे  
पितामह  
रहि-रहि कऽ उठबैत छलाह

कनेको अनठौने  
ओ गरजऽ लगैत अछि  
उकठ करैत अछि  
छिटऽ लगैत अछि नोनछर फुहार  
भिजबऽ लगैत अछि देह  
कखनहुँ ओढ़ा दैत अछि  
लहरिक दोलाइ  
कखनहुँ ढेहु पर उछला कए  
लोकऽ लगैत अछि

सागर

कोनो-ने-कोनो लार्थें  
हरदम बजबैत अछि  
पड़ाय चाहैत छी तऽ दौगि कए पकड़ैत अछि  
सितुआ-शंख  
काँकोड़-माछ  
दऽ कए  
खेलऽ कहैत अछि  
मांगैत छियैक मोती  
तऽ भीतर बजबैत अछि  
डुबकी लगाबऽ लेल  
पानिमे गोंतैत अछि

सागर

हमरा सऽ चिककावरबेरि खेलैत अछि  
हम दौगैत छी  
ओ लपकि कऽ पकड़ैत अछि  
फिन्तु अपना बेर मे  
ओ छूअऽ नहि दैत अछि  
हम जखन दौगि-दौगि  
हॉफऽ लगैत छी  
रुसि-रुसि कानऽ लगैत छी  
धुर छी: कहि हँसि-हँसि कए  
कान मड़ोरैत अछि  
बिहुआ काटैत अछि  
माथ हँसोथैत अछि  
नौर पोछैत अछि  
नूनू कहि  
बाबू कहि  
हमरा मनबैत अछि

सागर

पितामहे जकाँ  
हमरा लेल चिन्तित रहैत अछि  
पाथर तोड़ैत अछि  
रस्ता केर कांट-कुश बीछैत अछि  
तप्पत भेल बाटकेँ सिंचित करैत अछि

भरि-भरि राति जागल रहि  
खिड़की पर टांगल रहि  
हमर सुधि लैत अछि  
योगक्षेम बहैत अछि □

कर्णामृत : अप्रैल-सितम्बर 1993



हृदय-तलसँ हजारक मीटर ऊपर

नीलगिरि  
हम अहाँकेँ बहुत दूर छोड़ि आयल रही  
दर्शन स्पर्श सामीप्य  
सभकेँ अतीतक एकटा संयोग वृद्धि  
घुरि आयल रही  
कंकरीट आ मशीनक अभेद्य वीथिकामे

हृदय तलसँ हजारक मीटर ऊपर  
प्रदूषण-युक्त कुचक्र-शृंखला मे  
पूर्वगतिसँ चलऽ लागल छल श्वास

अल्पकालिक विरतिक बाद  
आओर उन्माद-ग्रस्त  
रहऽ लागल छल आत्मा  
आओर नृशंस बनल जा रहल छल  
व्यवहार

अभयारण्यक  
सघन सुदीर्घ वनलतालिंगित मनोरम दृश्य  
युक्किलिप्टस चीड़ शाल सागवान  
देवदारु चंदनक  
शीतल सुगन्धिमय छाया वितान  
शिखर सँ उतरैत आ क्षितिजाभास दैत  
लज्जानत कॉफी आ चाय-वाटिकाक हरीतिमा  
वन-कन्या केर स्वेद-स्निग्ध सौन्दर्य  
वनस्पति केर दाह-हारी स्पर्श  
सभ भऽ चुकल छल विस्मृत  
आ करऽ लागल छलहुँ  
अपन अदाह्य प्रकोष्ठमे बैसि  
लाक्षागृहक निर्माण  
रचऽ लागल छलहुँ

आदमीकेँ जोहैत/20

भूत-पर-भूत  
एक-सँ-एक लीह-झार  
गमारऽ लागल छलहुँ  
घरली-गगन-समुद्रमे बारूद-जाल  
फिन्तु  
कोनो निर्दिष्ट बटन पर आंगुर राखऽ सँ  
पहिनाहि  
होमऽ लागैत अछि प्रलयंकर गर्जन  
फाटऽ लागैत अछि  
घण्टकटोर छाती  
टूटऽ लागैत अछि  
पूर्ण सतर्कतासँ बनाओल  
सभ सुरक्षा-कवच  
आ हम  
अपनाकेँ पावैत छी छोछित्त  
कोनो उत्तुंग शिखर पर

धुरैत अछि चेतना नहि जानि कतेक कालक बाद  
सुनैत छी  
हवाक सन्-सन्  
फुजैत अछि आँखि  
देखैत छी माथ पर निरभ्र आकाश  
पृष्ठतलकेँ गुदगुदाबैत दूभिकेर उच्छ्वास

होइत छी टाढ़  
देखैत छी धुंधमे डूबल पर्वत-राजि  
गाछ-वृक्ष, शस्य... सभ एकात्म  
पुछैत अछि मोन  
अहाँक अभेद्य प्रकोष्ठमे  
प्रविष्ट भेल कोना बोन  
आ कि सभ छल स्वप्न  
अथवा  
आइ धरि छलहुँ अपना मे बन्न  
आ भऽ गेलहुँ अकस्मात् आतंकित  
अपनहि हिंसला  
कऽ रहल अछि प्रत्याक्रमित

आदमीकेँ जोहैत/21



आओर कतेक संशय  
 उठि-उठि कए  
 करैत अछि नानाविध प्रश्न  
 हम भीतर जोहैत छी  
 बाहर दृष्टि दौड़बैत छी  
 धुंधमे डूबल बुझाईत अछि  
 सम्पूर्ण परिवेश  
 कतहु किरणक नहि लेश □  
 कर्णामृत : अप्रैल-जून 1994

## चौबटिया

हमस गाममे एकटा चौबटिया छल  
 जतय पुरुषार्थी लोक सभ बैसि  
 कौसी मुनिअबइत छलाह

जस किनको संग मे नहि छलनि  
 धर्मक लेल ओ सभ गंगा नहाइत छलाह  
 कोहबरसँ प्राप्त काम हुनका सभक लेल  
 कनसारसँ भूजा भूजि आनैत छलनि  
 मोक्ष भेटि जाइत छलनि  
 गौजाक दू-चारि दम लगा कए

चौबटिया एखनहुँ अछि  
 किन्तु चौक कहाइत अछि  
 पुरुषार्थिये लोक सभ एखनहुँ बैसैत छथि ओतय  
 जिनका धर्म, काम आ मोक्ष तीनू  
 दिआ दैत छनि एकसरे अर्थ  
 जे पिस्तीलक नोक पर बास करैत अछि

ई चौबटिया जाग्रत शक्तिपीठ मानल जाय लागल अछि  
 सुपर कम्प्यूटर पर प्रकट होइत छथि  
 अणु-आयुध-संयुक्ता चामुण्डा  
 देश-विदेश सँ जुमैत रहैत छथि  
 बलिभोगी शाक्त  
 वर्षक प्रत्येक दिन एतय  
 मनाओल जाइत अछि  
 विजयोत्सव रक्ताक्त □

वैदेही : जुलाई 1994



## चल भाइ चल

चल भाइ चल  
एम्हर छउ खाधि आ ओम्हर दलदल  
बिचला समतल पर अजगर सूतल  
मुँह बाटै पेट सँ ससरल-ससरल  
चल भाइ चल

बाज भाइ बाज  
एम्हर छउ नेता ओम्हर दलाल  
बिचला रस्ता पर शोणित केर थाल  
हत्यामे कटवै कि होयवै हलाल  
बाज भाइ बाज

लिख भाइ लिख  
एम्हर छउ मंडल ओम्हर कमंडल  
बीच मे जाति-धर्म केर दंगल  
एम्हर मरवै कि ओम्हर कटवै  
सोचि-समाझि कऽ लिख  
लिख भाइ लिख □

रचनाकाल : 1 जनवरी 1993

## मुक्त कुन्तला अभावमया

जंगलमे दीप नहि जरैत छैक  
बिजलीक खाम्ह नहि रहैत छैक  
सभक मन-प्राण पर सविखन पसरल रहैत छैक  
मुक्त कुन्तला अभावमया

लोक भरि राति तरंगन मनैत अछि  
आ पहररतिये सँ  
माथ/पाठ/कान्ह/कोर मे अपन-अपन पढाइ लादि  
नीचाँ उतरऽ लगैत अछि

नीचाँ मे  
झरकैत टिटुआइत गाछ-वृक्ष  
हकमेत मवेशी  
रोगाह ताप  
लुक-झुकाइत इजोत  
हँफसैत लोक

एहि सभकेँ ओ कोना सकत अंगेज  
फाटऽ लगैत छैक करेज  
ओ चकुराइत रहैत अछि बड़ी काल धरि  
मयदान ओकरा आश्चर्य आ अभाव सँ  
भरल बुझाइत छैक

ओ बिसरि जाइत अछि  
अपन कष्टपूर्ण जीवनक सभ दंश  
आ सस्त दाम मे  
बेचऽ लगैत अछि  
बचलही वस्तु-जातक अंश  
अपन पढाइ पर घुरि जयबाक लेल □  
प्रवासी : जून 1996



## घऽरो लगैत अछि डेराओन

बटुक  
अहाँ देखैत छी टी.वी. पर 'हॉरर शो'  
डर एकदम्मे नहि लगैत हैत  
विकराल आ भयावह आकृति सभ  
चारु भर ठाढ़ किडनैपर्स  
आतंकित नहि करैत हैत

छी अहाँ अजोह  
मुदा भऽ गेल छी अनुभव-सम्पन्न  
कऽ आयल छी अन्डर-वर्ल्ड सँ मास  
गोधबा आयल छी सौँसे शरीर पर  
की-कहाँदन  
कऽ नेने छी बिजुरीक कुर्सी पर बैसि कए  
इहलोक आ परलोकक यात्रा  
प्राप्त कयने छी लखटकिया मुक्ति

हमरा सभ चओर-चाँचर मे  
मचान पर एकसर सूतऽ वला लोक  
रहि गेलिअइ खेतसँ बथान धरि  
बूझि नहि सकलिअइ 'काउन्ट-डाउन'क अर्थ

ककरा कहैत छैक 'लाइफ-टेक्स'  
ककरा कहैत छैक 'फिरीती'  
से नहि बुझलिअइ  
घुघना देखिते, घिसिऔड़ काटऽ लगैत छी  
सभतरि 'हॉररे-हॉरर' बुझाइत अछि

बाउ,  
कने टी.वी. लिअऽ बन्न कऽ  
हमरा  
घऽरो लगैत अछि डेराओन □  
अर्पण : 1996

## चिन्ता जुनि करह बाउ

बूच कियैक छह  
ताइ आ नारिकेरक एहि गयोद्धत उद्यानमे  
फलजुक गाछ जकाँ मूड़ी कियैक झुकीने छह  
भाल कियैक छह स्वर्णरेखा जकाँ अग्निदीप्त  
मुँह कियैक छह तुन्न तोतापुली आम जकाँ

ओ नहुँ-नहुँ ससरि  
लग आबि भऽ गेल ठाढ़  
मुँह पर एखनहुँ छलैक  
हारल जुआरी वला झाड़ि  
छोड़ैत छल रहि-रहि कऽ भभका  
सम्भवतः ई देशी युवा नेता  
आक्रोश मे किछु बेसिये 'देसी' पीवि नेने छल

हम कहलिअइ  
अहुना केओ होइत अछि उदास  
ओहुना केओ हिम्मत हारैत अछि  
ई कि कोनो पंचबरखा धिकैक  
टुटिते रहैत छैक सभा  
होइते रहैत छैक चुनाओ  
एहि बेर ने ओहि बेर  
तोहरो गोटी होयबे करतह लाल

चिन्ता जुनि करह बाउ  
तौं छह तृणमुलिया खेलाड़ी  
राखैत छह सभसँ भितरघतिया सम्बन्ध  
करैत छह जनमत केर लेब-देब  
आबैत छह कला  
'बल्क'मे वोट कीनऽ वला  
तखन कोन चिन्ता  
तखन कोन परबाहि □  
पुष्पांजलि : अंक-5, 1999



## ओ सभ की जानऽ गेल

कखनहुँ फूल कखनहुँ पात खसबैत अछि  
गाछ-वृक्ष खिड़कीसँ रोज बजबैत अछि

हमर कडुआएल आँखि  
फाटैत माथ  
संकेतक भाषा बिसरि गेल अछि  
मृतप्राय देह हरदम औन्तल रहैत अछि

आम पर कोइली  
आ सीमर पर सूगाकें  
हमर प्रतीक्षा रहैत छैक  
नेनपन हमरा सभक बीतल छल एक संग  
एक्के गाछी मे  
एक्के सूरमे गैंचा-गैंची खेलैत  
एक्के रंग हमरा सभकें रहैत छल प्रतीक्षा  
अपन-अपन मायक  
भूख लागला पर

हम चेतनगर होइतहि भऽ गेलहुँ चतुर  
गूचना-सम्पन्न प्रविधि-प्रवीण सर्वगुण-आगर  
ठेठ गमार जकाँ ओ सभ रहि गेल गाछिये मे  
आनन्दोत्सव मनबैत

आइ जखन हम धुरल छी  
ओहि पुरना गाछीमे  
एतेक वर्षक बाद  
लगैत अछि एखनहुँ चिन्हैत अछि  
सीटी आ संकेत सँ ओहिना बजबैत अछि  
ओ सभ की जानऽ गेल  
हम भऽ गेल छी कतेक असंवेद्य □

कर्णामृत : अप्रैल जून 1996

## एहि अरण्यमे

एहि अरण्यमे  
हम रहैत छी ओ रहैत अछि  
औकरा सभहक गण रहैत अछि

धनुष रहैत अछि  
तीर रहैत अछि  
गहुआ पिबइत भीड़ रहैत अछि

भूख रहैत अछि  
गर्ज रहैत अछि  
आइ.एम.एफ. केर कर्ज रहैत अछि

शेयरवाला धन रहैत अछि  
मल्टीनेशनल धन रहैत अछि  
मुक्त व्यवस्था केर कण्ठमे  
राखल स्कैमक बम रहैत अछि

क्विलंटन केर पोस्टर रहैत अछि  
डंकल-गैट मोनस्टर रहैत अछि  
एफ-सोड्ड केर नासिकाग्र पर  
एमनेस्टी पोस्टर रहैत अछि

एहि अरण्यमे  
हम रहैत छी ओ रहैत अछि  
हमरा सभहक बम रहैत अछि □  
कर्णामृत : अप्रैल जून 1996



## कालाहॉडी

पुलिसकें एहू बेर  
भेटल छलैक दासक गंध  
दू-चारि टा भट्टीकें तोड़ि  
सभ दासखाना कऽ देने छल बन्न  
किछुकें लतिया-लटिया  
कहबा लेलक जे ओ लिखऽ चाहैत छल  
पूर्ण भऽ गेल छलैक जाँच  
लिखा गेल छलैक डायरी

दृश्यांकन कऽ चुकल छलाह मीडिया केर लोक  
रिपोर्टिंग कऽ देल गेल छल भरिपोख  
नेता लगा चुकल छलाह  
एक-दोसर पर आरोप  
शासन बैसा चुकल छल आयोग

मंत्री देखा चुकल छलाह  
लाखक लाख टनसँ भरल गोदाम  
कहि चुकल छलाह  
भूखसँ तड़पि-ऐंठि मरबाक बात कहि  
विपक्ष कऽ रहल छनि हुनका बदनाम

सभ अपन-अपन कर्तव्यक पालन कए  
भऽ गेल छलाह निश्चिन्त  
सभ करऽ लागल छलाह  
आबऽ वला सुखाड़ि आ कि बाढ़िक प्रतीक्षा  
मुदा कालाहॉडीक भविष्य पर  
लागल रहि गेलैक प्रश्नचिह्न □

रचनाकाल : 1995

## रुनेहवत्सला गोस्तनी

गोस्तनीमे बाढ़ि आयल छैक  
वर्षासँ अथवा बान्ह तोड़िकए नहि  
समुद्रक भितरिया स्पर्शसँ  
आलिंगन-समागमक निर्बन्ध आवेशमे  
गत्र-गत्रसँ बहरायल नोनछर पसेनाक  
अजस्र धारसँ

पहिले-पहिल हम जहिया देखने रहियैक  
ओ बाल-विधवा सन लागलि छलि  
भेल छल  
रत्नाकरक अछैत  
ई वैधव्य कियैक धारण कैलक  
रत्नगर्भा बाँझ कोना भऽ गेल  
बड़ी काल धरि सोचैत रहि गेल छलहुँ

साज-श्रृंगार-रहित एहि निष्प्राण नदीकेर दुनू कात  
उगि आयल झौआ आ बबूर  
एकरा तपोवन बना देने छलैक  
ताड़ नारिकेर आ खजूर

करैत छलाह एहि ठाम अरण्य-वास  
परम धार्मिक बक  
तपस्वी चिल्लोड़ि  
इन्द्रियजित बाज  
संयममूर्ति गिद्ध

ओ न पम्पा जकाँ पुष्ट छलि  
आ ने गोदावरी जकाँ भरिगर आ विशाल

भाइ-भौजाइकें  
गोस्तनीकें बिनु स्पर्श कयने



आगू बढ़ैत दिखि

छगुन्तामे पाँड़ मेल छलाह लखनलाल

पांडव आ पांछालीकेँ बुझल छलनि

उन्नतवक्षा गोदावरी पर पसरल

माया-कुहेसक रहस्य

छद्माच्छन्न दण्डक केर मर्मकथा

हुनका नीक लागल छलनि

बितायव अरण्य-वासक प्रारम्भ-काल

हिल्लोलित समुद्र आ हर्षोत्तुंग पर्वत-समूहक मध्य

कुन्तीक आँचर जकाँ पसरल

गोस्तनीक सान्निध्यमे

वर्षक वर्ष धरि अपन पौराणिकता

आ अतीतक वैभवमे

हमरा वीआइत छोड़ि दिअऽ वाली गोस्तनी

आइ अपन युवा-स्पर्शसँ

हमरा कऽ रहल अछि स्मन्वित

अपन आलोड़नसँ

हमर बिदा-पथकेँ बना रहल अछि अगम्य

एहि स्नेह-वत्सलाकेँ हम कोना बुझबियैक

कतेक मर्मन्तक अछि हमरा लेल ओकर कोरसँ

उत्तरि यात्रा पर बहरायय

ओकर स्नेह-स्पर्शक बिना जिनगी बितायय []

प्रवासी : जून-सितम्बर 1996

## सन्धिपत्र

आउ-आउ

सोझे भीतर आवि जाउ

बाहर कियैक लगौने छी भीड़

-कऽ रहल छी डेपाउज

-लगा रहल छी नारा

हम तँ अहीं सभक छी हरकारा

जखन चाहब फोलि देब अहाँ सभक फैक्टरीक ताला

आउ कनेक सुस्ता तऽ लियऽ

ठंढा वा गरम लए भऽ तँ जाउ शान्त

सभ समस्या केर छैक समाधान

नहि होउ अपस्यांत

क्षणांशमे जूमि जाइत छथि

बड़का-बड़का अफसर

बेयरा खनसामा खान-पान अधिकारी

हॉलमे प्रवेश करैत अछि घुड़कऽवला ट्रॉली

किछुकैँ विस्मित करैत छनि 'रॉयल सैलूट'

किछुकैँ मोहित कैलकनि 'बर्गरी'-स्तूप

तत्पश्चात्

अवतरित होइत छथि महामहिम उद्योगपाल

हाथ जोड़ि सभक कैलनि स्वागत

बाजलाह भऽ विनयावनत- शुरू कैल जाय

काजक बात प्रारम्भ करब कऽ कए पनपिआय

सभकेँ भेलनि

व्यर्थ करैत रहियनि हिनक विरोध

व्यर्थ छल हमरा सभक आक्रोश

ई तऽ लगैत छथि बड़ सहज लोक

- सभक सुननिहार

आदमीकेँ जोड़ैत/33



- कष्ट हरनिहार  
अल्पाहारक बाद  
सभकेँ थम्हा देल गेलनि रात्रि-भोजक 'मेनू'  
शुरू भेल प्रस्तावित समझौताक प्रारूप पर विचार

प्रतिवाद, विरोध, आन्दोलन करऽ वला माथ  
भऽ गेल छल जाम  
ओतय भरि गेल छलैक 'डिनर'क सरंजाम  
- भेंटऽ वला मोट-मोट लिफाफ

किछु खास किछु आम  
जे रहथि उपस्थित भेलाह एकमत  
कैलनि हस्ताक्षर  
पहिल पक्ष  
दोसर पक्ष  
तेसर पक्ष  
तैयार भऽ गेल संधि-पत्र

एहि तरहें  
शौषणक विरुद्ध  
श्रमहितमे आयोजित एहि संध्याकेर भेल समापन  
गद्गद् महामहिम ठाढ़ भए  
कैलनि सभक प्रति आभार प्रदर्शन आ धन्यवाद ज्ञापन □  
रचनाकाल : 25 जून 1995

## ओ जहिया आयल छल गामसँ

ओ जहिया गामसँ आयल छल हमरा लग  
दुनू डिम्हामे भरल छलैक  
ओतुक्के दृश्य, लोकवेद, चरचाँचड़, डाबरनदी  
देखि ओकरा  
आँखिमे घूमऽ लगैत छल सौंसे गाम

किछु दिनक बाद ओ रहऽ लागल असहज  
चकित कैने रहैत छलैक शहर  
-चुट्टी जकाँ ससरैत लोक  
-मिल-फैक्टरीक साइरन, चिमनीक धुआँ  
-अपन चाकरी, हमर सान्निध्य

बीतल किछु आओर दिन  
आँखिक नीलाभा भऽ गेलैक ओड़हुलाह  
बाजऽ लागल नेता/दलालक भाषा  
आब हफ्ता उठा पोस्ट ऑफिस नहि दौगैत छल  
ने लियऽ आबैत छल  
हमर ठेकान पर आयल अपन चिट्ठी

जेना-जेना समय बीतल गेलैक  
होइत गेलैक ओकर प्रभाव-विस्तार  
भऽ गेल मजदूरसँ महानायक ओ  
जीप, वायरलेस, रिमोट धयने रहैत छलैक पछोर  
जासूसी दृष्टि पर रहैत छल सदिखन ओ

आब ओ हमरा कारण नहि  
हम ओकरा कारण जानल जाइत छी  
ओहि महानायकक संरक्षणमे  
रहऽ वला मानल जाइत छी □  
विचार : फरवरी-अप्रैल 1998



## जाड़क ओहि दुपहरियामे

चिक्कन पिछड़ाह पाथर पर  
हमरा ठमकल देखि  
ओ बाजलि-नहि खसब, आगू बढ़इने जाउ पयर  
नीचाँ बेसी गहीर नहि छैक-धाप लगाउ  
हम खसऽ नहि देब  
हम बढ़ैत छी आ डगमगाइ लगैत छी  
ओ हँऽ-हँऽ करैत फानिकए अबैत अछि लग  
लैत अछि डेन धऽ  
बाजैत अछि  
एहन समतल ढलान पर तऽ हमरालोकनि  
चिक्का-दरबरी खेलाइत छी  
अहाँ कियैक डेराइत छी  
हम ओकर कान्ह पर भार देने  
पार करऽ लगैत छी ढलान  
ओ फरोस छोड़ी सौंसे जंगल घुमबैत अछि  
पुछैत अछि नाम कखनहुँ एहि गाछक  
कखनहुँ ओहि फूलक  
हमरा बौक बनल देखि ओ भभाकए हँसैत अछि

बुझबैत अछि जड़ि-शाख, लता-पातक औषधिगुण  
वन्यपशु, जीव-जन्तु आ मनुखखक  
नियम-बद्ध सहअस्तित्वक रहस्य  
कोना ढाठक घेरामे लोक रहैत अछि निचैन सूतल  
कोना पीठ आ पेट परसँ सांप ससरि जाइत छैक  
कोना भयमुक्त छोट-पैघ जानवर  
एक्के घाट पर पिबैत अछि पानि

ओ तोड़ि आनैत अछि  
कँटही गाछक छीप परसँ एकटा कोंड़ही  
मसोड़ि कए दैत अछि मुँहमे ठूसि  
हमर मुँहसँ बहराइत अछि- ई तऽ बड़ मीठ छैक

आदमीकें जोहैत/36

ओ एकटा फऽड़ तोड़ि कए दैत अछि  
-एकरा खा कए देखिऔक  
एक्को बेर खाँसी नहि हैत

जाड़क ओहि दुपहरियामे  
ओकरा संग एम्हरसँ ओम्हर होइत  
नहि जानि कतेक ऊपर चढ़ि गेल छलहुँ  
बिसरा गेल छल हँफनी-खाँसी  
पयरो आब थिर भऽ गेल छल

ओ हमरा उल्लसित देखि कहैत अछि  
चलू आब थोड़वे दूर छैक चोटी  
चढ़ाइयो बेसी नहि छैक  
जड़ी-बूटी, शाल-देवदारसँ भरल  
जंगलाह रस्ता पर चलब बड़ नीक लागल  
साँझो पड़बामे एखन बड़ देरी छैक

हम अपन गुरुआइनिक संग बढ़ऽ लगैत छी  
पहुँचि जाइत छी पर्वतशीर्ष पर  
देखाइ पड़ैत अछि स्वच्छ-नील पानिसँ भरल बड़का झील  
तृणरहित सुचिक्कन मयदान  
कहैत छियैक हमरा एतय फुटबोल खेलैवाक मोन होइत अछि

ओ खिलखिलाइ लगैत अछि  
कहैत अछि- एतय रहल रहथि द्रौपदीसमेत पाण्डव  
बितौने रहथि मासक मास  
-ओतय छैक भीमक पयरक चेन्ह  
-ओहि पाथर पर बैसैत छलीह द्रौपदी  
-ओ रहल पाण्डव-शिला  
होयताह खेलाइत पाँचो भाइ ओही ठाम  
साँझ होइ पर रहैक  
मुदा ओ गिरिकन्या घुरऽ केर नाम नहि लैत छल  
ओकर आँखिमे ठस्सल शैल-सुषमा देखि  
हमरो ठकबिदुरी लागल रहि गेल छल □  
भारती मंडन : मार्च 1998

आदमीकें जोहैत/37



## अहाँ कोम्हर नुका गेल छी प्रभासजी

एहि पार हम  
ओहि पार अहाँ  
बीचमे विद्यासागर सेतु

ई स्फूर्तिदायक व्यवधान  
कतेक नीक लगैत छल  
हमरा दुनूकेँ प्रभासजी

किछु किलोमीटर दूर रहियो कऽ  
हम एक-दोसरकेँ  
हुलकी मारि सकैत छलहुँ  
चओरक बधवार जकाँ सोर पाड़ि सकैत छलहुँ

नेशनल लाइब्रेरीक सान्हि  
आ चिड़ियाघरक झोंझ  
हमरा सभक आवाजकेँ  
नहि रोकि सकैत छल  
पुलक नीचाँसँ कतवो बहैक पानि  
शिवपुर आ अलीपुरक स्नेह-बन्धकेँ  
तोड़ि नहि सकैत छल

पयरे बौआइत  
जखन-तखन अहाँ गाबऽ लगैत रही  
'राजा पोखरिमे कतेक मछरी'  
आ हम कहैत रही  
ई राजाक पोखरि नहि  
हुगली थिकैक, प्रभासजी  
एतय कोनो माछ पर हाथ नहि लगवियौक  
पहिने नागार्जुनक 'तालाब की मछलियाँ'  
आ राजकमलक 'मछली मरी हुई' केँ बेकछाउ  
तखन ककरो पर नजरि गड़ाउ

अहाँ हँसऽ लगैत रही  
आ लगैत रही आगू बढ़ऽ  
ऊर्ध्वमूल पुलक अष्टावक्री घुमावमे  
अपस्याँत होयबाक लेल

हम ऑफिसक धाकल  
ठेहुनक दर्दक मारल  
तामसेँ चलब छोड़ि बैसि जाइ  
आ अहाँ ओम्हरसेँ  
कोनो नव कथानक नेने पहुँचि जाइ  
भऽ जाइत रहय शुरू कविता आ कथाक प्रेम-कलह

आब ओहि घुमावमे  
हम एकसर पड़ि गेल छी प्रभासजी  
बेशीकाल विपरीते दिशामे बौआइत छी  
नहि होइत अछि आब ठेहुनमे दर्द  
अथवा अहाँ पर तामस  
अन्धकारक ई यात्रा बड़ कष्टकर लगैत अछि  
अहाँ कोम्हर नुका गेल छी प्रभासजी □  
भारती मंडन : मार्च 1999



## अहाँ विदा भऽ गेलहुँ यात्रीजी

अहाँ विदा भऽ गेलहुँ  
ई हमरा फोन, टी.वी., रेडियो आ अखबार कहलक  
पोथीसँ ठसाठस भरल कोठलीमे  
अहाँकेँ कनझप्पा सम्हारैत ओ हमरा देखा गेल  
ईहो कहलक जे राजकीय सम्मानक संग  
अहाँकेँ ओहि तरौनीमे जरायल जायत  
जलयसँ अहाँ कहियो भागि गेल रही  
आ भोगैत रहि गेल छलीह काकी

ई सभ समाचार नीक लागल  
मोन पड़ि गेल कोना अहाँ एहन-एहन समाचार  
चौरंगीक मक्खूरामक दोकानसँ कीनि कए  
झोड़ामे भरि लैत रही आ  
गीतेश, नेवाड़ अथवा कीर्त्तिनारायणक डेराक  
अपन घटिसारमे ओकर कपाली व्याख्या करैत रही

आइ अहाँ रहितहुँ  
तँ अपन मृत्युक समाचार वला कटिंग सभ नेने  
डेरा पर अबितहुँ  
समारोहमे हमरो संग लऽ जा  
अपन शवक राज्याभिषेक देखबितहुँ  
कहितहुँ- देखलहक कीर्त्ति  
कोना सभकेँ ठकि लेलकनि ठक्कन मिसर  
ई यात्री नागार्जुन की कहियो मरतनि

अहाँ मरब नहि से हम जानैत रही  
अहूँ जानैत रही  
आइ अपन पजरैत चितो परसँ  
जँ 'घोर औघड़ी अभिव्यक्ति' कऽ रहल छी  
मृत्युकेँ ठेंगा देखा रहल छी  
तँ हमरा आश्चर्य नहि होइत अछि

हे हमर पिता  
सौंसे देशक नागाबाबा  
यात्री-नागार्जुन  
हमरा ई बूझल अछि  
हमरा सन अहाँक कतेक सहस्र पुत्र आ पुत्री  
देशक सभ कोनमे पसरल छथि  
सभ अहाँ पर एकसमान दावा ठोकनिहार  
सभक अहाँ पर सर्वाधिकार  
सभ अहाँ लेल आतुर

सभक चूल्हि पर अहाँक लेल चाहक केतली चढ़ल  
सभक भनसाघरमे  
अहाँक प्रिय व्यंजन आ माछ प्रतीक्षा करैत  
आ  
सभक घरमे अहाँ विराजमान  
चाहक चुस्की लैत  
नाम लऽ गृहिणीकेँ 'ई ला', 'ओ ला' कहैत  
सभक धिया-पुताकेँ संग लऽ  
गामक चौहद्दी देखबैत

काश्मीरसँ कन्याकुमारी धरि पसरल  
अहाँक सभ संतानकेँ लगैत छनि  
अहाँ सभसँ बेशी हुनके मानैत छियनि  
हमरो लगैत अछि

हे अनिकेत अनिबन्ध यात्री  
हमरा ई तऽ बता दितहुँ  
कतऽ जा सिखलियेक  
ई अद्भुत जादूगरी  
ई सम्मोहन-मंत्र  
ई स्नेह-वृष्टिक कला □

मिथिलांचल सम्पर्क : 1999



के थिकें तों

के थिकें तों  
कोना अइलें एहि अभेद्य अरण्यमे  
के तोहर छउ मंत्र-दाता  
के तोहर मानुष्य-हता  
आकि छैं तों भेदिया बनि  
सम्मिलित एहि वन्यमे

हम कहलिअइ  
हम ने कोनो भेदिया वा आदिमानव  
छी ने मुनि अथवा यती  
भेल यंत्रादेश पर छी  
एहि अरण्यक पथी  
यात्रापथ छल हमर आकाश  
ग्रह-उपग्रह हमर आखेट छल  
अंतरिक्षी भेद जानब  
दूरवीक्षी ध्येय छल

गेल छी भू पर उतारल  
सर्वेक्षणी उद्देश्यसँ  
जोहि आनऽ सम्पदा  
एहि भूतली परिवेशसँ

छी अहीं केर  
दृष्टि  
सृष्टि  
अनुपूरक  
सखा  
यांत्रिक प्रतिरूप

रहऽक अछि संग-संग अहाँ केर  
करऽक अछि संभव असंभवकेँ कठिन उद्योगसँ  
नाश वा निर्माण-जे चाही दुनूक सहयोगसँ

हमर ई पूर्वसंचित, भावोद्रेकी आत्मपरिचय  
ने ओकरा विस्मित कैलकैक, ने विचलित  
जेना ओकरा बृझल छलैक  
हमर कृत्रिम विवेकक सीमा  
जेना ओ जनैत छल  
ओकर सभ प्रतिवाद जयतैक व्यर्थ  
जा धरि 'कैसेट'मे भरलहा वाक्य सभ  
भऽ नहि जयतैक समाप्त

एहि सम्पूर्ण अवधिमे  
ओकर आग्नेय दृष्टिसँ  
बहराईत रहलैक स्फुलिंग  
आशंकाक धुआँ  
किन्तु हम जहिना चुप भेलहुँ  
ओ देखऽ लागल चारो भऽर  
करुणार्द्र भऽ उठलैक ओकर आँखि  
फुटलैक नहि मुँहसँ  
एको टा प्रतिवाद अथवा स्वीकारक बकार  
श्लथ पयरेँ  
नहुँ-नहुँ ओ भऽ गेल अदृश्य  
नहि जान कोम्हर □

अंतिका : जुलाई सितम्बर 1999



## रोज भोरमे

बड़ीकाल धरि  
रोज भोरमे  
चोंच मारइए  
नऽव कांच पर  
छोटकी फुद्दी

चिं-चिं-चिं

दुक्-दुक्-दुक्  
फुदका-फुदकी रोज सुनइ छी  
रोज जोहाइछ पुरना गंजी झाँपऽ सीसा  
तमतमाइत छथि कर्कश स्वरमे कोकिल-कंठी

ककर-ककर फोड़लकइ अइना ई जरलहिया  
रोज सुनइ छी  
आइ ने छोड़बनि नहि आओत जैं कांटी-जाली  
आइ ने छोड़बनि एक्को छेद रहल जैं खाली  
रोज सुनइ छी

सूर्य जखन उगिते रहैत अछि  
रोज आवि फुद्दी बैसइए  
सिरमामे राखल देबुल पर झिझरी बातें  
फुदकि-फुदकि हमरा उठबइए  
रहि-रहि कए जुल्फी नोंचइए

हम अनठौने पड़ल रहइ छी  
फुद्दी आ पत्नी  
दुनू केर आँखि मूनि लीला देखइ छी  
रोज भोरमे  
बड़ी काल धरि □

अंतिका : सितम्बर 1999

## रुसाफुल्ली

दमर-अहाँ केर देखा-देखी  
मुँह लटकायब सीख गेल अछि  
अपन बछरू

माय धुधुनसैं देह हँसोथइ  
ओ नहि डोलय  
सींग सटा गुदगुदी लगाबइ  
आँखि ने फोलय

चुम्मा लइ छइ  
नाक धसइ छइ  
हँफिया-हँफिया पुचकारै छइ  
गलफड़सैं गौँउज चुबइ छइ  
किन्तु ने ओ कनियो टसकइ छइ

देखि-देखि ई रुसा-फुल्ली  
हम चिन्तित छी

दूध भरल थन नेने  
गैया रँभा रहल छइ  
अनमनाह बछरू  
भूखल रहि सता रहल छइ □  
अंतिका : सितम्बर 1999



## प्रियंवद

पहिने रखवा लेलियैक हथियार  
नष्ट कऽ देलियैक प्रतिरोध करऽक शक्ति  
मिझा देलियैक चरित्र आ आदर्शक आगि  
फेर  
देलियैक पहिरा  
क्षयरोगिया वस्त्र  
जाहिसँ छिजि जाय काया  
फूटइ नहि बकार  
माँगय नहि रोटी  
कऽ नहि सकय  
छीनल जाइत अधिकारक लेल प्रतिवाद

प्रियंवद!

कतयसँ सीखि आयल छी  
एहन मीठ भाषा  
ई वशीकरण-मंत्र  
ई सम्मोहन-कला  
बड़का बड़का विषधरकें लैत छी बना  
पछलगुआ  
जंगलकें बदलि दैत छी अभयारण्यमे  
ऋद्धि बनि जाइत छथि अनुगामिनी  
सिद्धिकें बना लैत छियनि अंकशायिनी

हे हमर सखा प्रियंवद!

हमरा तँ चकबिदोर लागल रहि जाइत अछि  
अहाँक बहुरूपिया लीला देखि □

अंतिका : सितम्बर 1999

## स्वप्नजा अनिन्दिता रिमता

कहियो पिदूसवर्गमे लागि गेल छल आँखि  
आ सपना देखैत  
पहुँचि गेल छलहुँ  
'निआग्रा' जकर अट्टहास करैत जल-प्रपात पर  
अनवरत प्रस्फुटित होअए वला पारिजात  
कऽ देने छल हमर आत्माकें सुगन्धि-स्नात

हम महमह करैत  
नहि जानि कखन धरि  
विचरण करैत रहि गेल छलहुँ  
रन्नायु-मुक्त आकाशमे  
नहि जानि कहिया धरि  
छानैत रहि गेल छलहुँ गिरि-प्रान्तर कस्तुरी-मृग जकाँ

आइ जखन कि हम  
अपना जनैत जागल छी  
अहाँकें पवैत छी  
अपन निर्दोष चंचलताक संग  
मृग-शावक जकाँ ठाढ़ि  
हाथमे नेने जुआरेज, मेक्सिको, एल पासो, टेक्सासक  
हवाई जहाजसँ लेल फोटोग्राफ

होइत अछि हमर सपनामे देखल दृश्य सभ  
अहाँक कैमरामे कोना पहुँचि गेल  
आ कि हम एखनहुँ सूतल छी

हे हमर स्वप्नजा अनिन्दिता रिमता  
अहाँ कनेक हमरा छूचि कए तऽ बताउ  
बाबूजी, अहाँ सरिपहुँ जागल छी □  
जानकी : अक्टूबर-दिसम्बर 2001



सर्वभंगला सी.टी.बी.टी.\*

बन्धु आउ

ब्रह्माण्डीकरणक एहि ब्रह्म-मुहूर्तमे

'ग्लोबल'- समृद्धिक लेल

हमरा लोकनि

परमशक्ति- स्रोत पंचदेवताक\* पूजा कए

अणुताप-निवारिणी सर्वभंगला सी.टी.बी.टी.\*क आवाहन करी

शस्त्र-समर्पण कए आ हस्ताक्षर-युक्त संधिपत्र चढ़ा

आराधना करिअनि

अन्तरिक्षवासिनी

सृष्टि-स्थिति-विनाशक देवी

भेद-द्वेषमयी प्रक्षेपाक्षी अण्वेश्वरीक

प्रसन्न करिअनि

शरण्यकें सुरक्षा प्रदान करऽवाली

अमेय विक्रमा कृराकें

ओएह हरतीह

हमरा लोकनिक शत-सहस्रवर्षीय दारिद्र्य

होअए नहि देतीह कहियो

आक्रमित

दिआतीह भय-मुक्ति

करतीह सनाथ

हमरा सभ रहल छी सभ दिनसँ परोपकारी

दैत रहल छी

अपन अस्थियो हथियार बनयबाक हेतु

रक्त आ माँसु दए

करैत रहल छी

बुभुक्षितकें तृप्त

आइ कियैक भऽ रहल छी किंकर्तव्यविमूढ़?

आउ,

करी अपन-अपन बल्कलक त्याग

अपन देश

अपन देह

अपन आत्माक भांज

होइत जाइ विखण्डित

आ प्राप्त करी एटमी विश्वरूपाक सायुज्य □

भारती मंडन : जुलाई-मार्च 1998

\* अणुशक्ति सम्पन्न पाँचो देश जे संधि-पत्र पर हस्ताक्षरक लेल  
दोसर देशकें विवश कऽ रहल छथि।

\* 'कम्प्रीहेंसिव टेस्ट बेन ट्रीटी' - परमाणु परीक्षण निषेध-संधि



## झुनझुनावाला

माथमे टोपी  
पयरमे धुंधरू  
एक हाथमे बाँसुरी  
दोसरमे झुनझुना

नर्तकक एहि मुद्रामे  
रस्ता-चौबटिया  
गली-कुच्ची  
दोआरि-दोआरि  
धूमि-धूमि  
ओ बजबैत रहैत छल झुनझुना  
ठाढ़ भऽ जाइत छल  
कोनो कोनटा, कोनो दलान, कोनो इनार लग

कोरक बच्चा  
कानब बिसरि जाइत छल  
झुनझुनामे फेंकाइ लगैत छल नवजातक पयर  
बचकुन सभ कऽ दैत छलाह खाली सभ खाट

जोहाइ लगैत छलीह माइ बहार करऽ पाइ  
तोड़ल जाइ लगैत छल जुष्टीसँ सीस  
बहराइ लगैत छल मौनीमे धान  
हुलकी मारैत रहि जाइत छलीह कनिजा  
बूढ़ि आ पुरनिजा

आ ओम्हर  
होअए लगैत छल हल्ला  
पहिने हमरा, पहिने हमरा

सोझ सपाट गमार सन लागऽवला  
ओ झुनझुनावाला

खयं वनल रहैत छल नमाशा  
धियापुताक लेल  
बड़ी-बड़ी काल धरि  
ओ नाचैत रहैत छल  
ताल पर धिरकैत रहैत छलैक  
ओकर पयर  
बाजैत रहैत छलैक धुंधरू  
बजबैत रहैत छल बाँसुरी

कलैक युग बीत गेल  
मुदा एखनहुँ भरमौने रहैत अछि  
ओ झुनझुनावाला

आ  
निस्तब्ध रातियोमे  
सुनाइ पड़ैत अछि  
ओकर धुंधरू  
ओकर बाँसुरी  
ओकर झुनझुना  
ओकर पदचाप  
संगीतमय बनौने रहैत अछि  
ओ हमर एकान्तकें □

वैदेही : सितम्बर-दिसम्बर 2000



## मरघट बनल मएदानमे

निस्तब्ध रातिमे  
डोलैत अछि धरती  
आ क्षणांशमे  
परिणत भऽ जाइछ  
ध्वंशावशेषमे  
गामक-गाम  
जिलाक- जिला  
ढहि जाइत अछि  
सभ गढ़ आ किला

क्षत-विक्षत अंग-प्रत्यंगकेँ  
चुनि-बीछि-जोड़ि कए  
देल जा रहल अछि शरीरक रूप  
गनल जा रहल अछि लहास

मरघट बनल मएदानमे  
भऽ रहल अछि सामूहिक दाह-संस्कार  
गामक एकमात्र जीवित व्यक्ति  
पथरवगुना बनल अछि टाढ़

एहि सभसँ अनजान  
एकटा अबोध बालक  
कैंपक आगूमे  
कऽ रहल अछि  
अपन मायक घुरि अयबाक प्रतीक्षा □  
रचना : अक्टूबर-दिसम्बर 2001

## एनम् छिन्दन्ति शस्त्राणि, एनम् दहति पावकः

एकटा मोटर साइकिल  
एम्हरसँ बहराइत अछि  
ओम्हरसँ एक टा ट्रेलर  
रामनाम सत्त... कहैत सिमरिया दिस जाइत अछि

मोड़ पर  
अजानक गाछ तऽर एकटा वृद्ध  
'नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि....' पढ़ि  
ओहि बिनु पम्हवला किशोरकेँ श्रद्धांजलि दैत छथि  
पुलिस केर पहुँचऽसँ पहिनहि  
दाह-संस्कार भऽ जयबाक बेगरता बलबैत छथि

हम अपन दलान परसँ  
एहि प्रकारक हत्या, शवयात्रा आ श्रद्धांजलि  
प्रायः रोज देखैत छी  
रोज भोरमे मित्रक संग चाह पियैत  
अखबारक पन्ना सभ उनटा-उनटा कए  
बढ़ैत हत्या आ अपराध पर चर्चा करैत छी

जोहैत छी  
मृत्युक आदंकमे जीबैत मनुखक लेल  
जीवनक अर्थ  
सोचैत छी  
शस्त्रक छायामे शास्त्र कतेक भऽ गेल असमर्थ  
कियैक ओकरा लेल भऽ गेल छैक जरूरी देहमुक्ति  
जे नहि कऽ सकैत अछि यंत्रमुक्ति  
कियैक गीतासँ अर्जित विवेक  
कोनो मदति नहि करैत छैक  
कियैक ओ बूझऽ लागल अछि  
आत्माकेँ वध्य आ दहनशील □  
रचना : अक्टूबर-दिसम्बर 2001



## निब्ब

राति भरि सूतब  
अथवा भरि राति सूतल रहब  
ककरा नहि नीक लगैत छैक  
राति भरि सूतब आ सपना देखैत रहब  
-ई विचार केहन उत्फुल्ल करैत छैक मोनकै

मुदा राति कोना होइत छैक  
कखन होइत छैक  
लोक कोना सुतइ अछि  
सुतलामे केहन लगैत अछि  
ई हमरा नहि बूझल अछि  
की अहाँ हमरा बता सकै छी

मुदा अहाँ तऽ स्वयं सूतल आ भयाक्रान्त लगैत छी  
अहाँ कोना कऽ सकब हमरा भयमुक्त  
नहि, नहि  
अहाँ दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक, प्रकृतिशास्त्री  
बला मुद्रा नहि अपनाउ  
अथवा ओझा गुनी ज्योतिषी बला दिअऽ नहि समाधान  
हम आइ धरि नहि देखने छी  
लोककै निन्नसँ जागैत  
ओ कहियासँ सूतल अछि  
सेहो नहि अछि ज्ञात

भ्रमवश अहाँकें जागल बूझि  
एतेक बात कहि गेलहुँ  
ओना हमहुँ जन्मेसँ सूतल छी  
आ सुतले-सूतल जोहि रहल छी अँकाक समाधान  
अपनाकें जागल बूझि  
जोहि रहल छी सूतल लोक  
निन्नोमे छी हम निद्राविहीन □

कर्णामृत : अक्टूबर-दिसम्बर 2002

## ओ आ हम

ओ खेलाइत छथि  
शतरंज  
हम लिखैत छी  
कविता

हमरा लोकनिक कार्यव्यापारमे नहि अछि  
कोनो समानरुचिता, तारतम्य  
अथवा स्वार्थयोग  
तथापि हम दुनू गोधियाँ छी

ने हमरा बिसात वा शह-मात बूझल अछि  
ने हुनका राग लय छन्द  
बिनु बुझने  
हम हुनका महान खेलाड़ी कहैत छियनि  
ओ हमरा महान कवि

हम दुनू  
अहो रूपं अहो ध्वनिः बला पारस्परिक अभ्यर्थनासँ  
संजीवनी प्राप्त करैत छी  
आ एक-दोसरक अभिनन्दनक जोगाइमे  
लागल रहैत छी

ललाट पर गोधवा नेने छी बड़का-बड़का उपाधि  
पागसँ पनही धरि पर चढ़वा नेने छी  
प्रशस्ति-लेप

ओ हमरा लेल जोहैत छथि मंच  
हम मंचक लेल भाषण लिखि  
गढ़ैत छी हुनक छवि  
ने हुनका सन नेता  
ने हमरा सन कवि □

रचना : जुलाई-सितम्बर 2002



## गिल्लू

कहियो घास-पातक अऽदसँ  
कहियो कोनो झाड़ीक दोगसँ  
ओ हमरा  
रोज आबि कऽ देखैत छलि  
आ फेर जंगल दिस घुरि जाइत छलि

पहिने हमरा भेल  
ई कोना सीखि गेल  
मैथिल कन्या वला  
हुलकी मारि चोटहि घुरि जयबाक कला  
मुदा ओ जखन बूझि गेलि  
ई व्यक्ति घुरि कए कतहु जाइ बला नहि  
तऽ भऽ गेलि निधोख  
आब छोड़ि देलक जोहब कात-दोग  
सोझे चलि अबैत छलि 'लोन'मे  
जहिया जेना होइत छलैक मोनमे

खेलाइत रहैत छलि बड़ी-बड़ी कालधरि  
एम्हर-ओम्हर  
देखि हमरो लैत छलि कखनो काल कनखीसँ

ई क्रम चलैत रहल कतेक मास  
ओ आब रहइ लागलि हमरे लग बेसी  
हम स्मिताकेँ बजा कए कहलियनि  
कनिजा, हमरा-लोकनिकेँ तऽ आब घुरबाक अछि  
मुदा छोड़ि कए जा रहल छी  
अहाँ लग ई दुलारु बेटी  
हमरा सभ जतय रहब  
अहाँ-लोकनि मोन पड़ब  
मोन पड़त अहाँक ई चंचल प्रतिवेशी □  
घर-बाहर : जून-सितम्बर 2002

## रामशून्य ग्लोबल हृदय

नदी एहि पारक अछि  
पानि ओहि पारक  
पानि प्रत्येक वर्ष सिमान तोड़ैत अछि  
एहि अथवा ओहि पारकेँ मासक-मास  
गोंतने रहैत अछि

ई जल-प्लावन थिक आकि जलाक्रमण  
-एहि तथ्यकेँ केओ बूझय  
ओहिसँ पहिनहि उटि जाइत अछि विवाद

एक देशक आरोप छैक  
'वाटरगेट' खोलि देल गेल छैक  
दोसर देश कहैत छैक  
बर्फ बेशी पिघलि गेल छैक

हे हमर प्रिया  
हमरा कहिया धरि  
प्रतीक्षा करऽ पड़त  
राष्ट्रीय समझौता आकि अन्तर्राष्ट्रीय हस्तक्षेपक  
अपन अथवा अहाँक पारगमनक लेल

हमरा दुनूक मध्य  
आबि कए ठाढ़ि भऽ गेल अछि  
-विदेश नीति  
-अन्तर्राष्ट्रीय सीमा  
-राजनयिक कुटिलता  
हाथमे आबि गेल अछि खजुरी  
एहि विश्वग्रामक एक बंकरसँ बहरा कए  
दोसर बंकरमे  
'निर्गुन' गाबऽक लेल



हे हमर संगिनी  
हमरा लोकनि  
एहि रागशून्य ग्लोबल हृदयमे  
कहिया धरि जोहैत रहब  
अपन प्रेमक सगुण-साकार शिशुक लेल  
अनुरागक रंग  
कहिया धरि सोझराबैत रहब  
प्रकृतिक नाम पर होइत राजनीति  
आ राजनीतिक प्रकृतिकेर ओझरायल ताग  
अथसँ पहिनहि कोना कऽ ली इतिकेँ स्वीकार

आउ  
हम सभ एहि सूचना-प्रसूत ग्लोबल भेदन करी  
आ जोही  
ओहि ब्रह्माण्डकेँ  
जे अपना दुनूकेँ प्रेम करऽ सिखौने छल  
आ हमरा सभक माथ पर  
आशीर्वादी वितान तानने छल □

खोज-खबरि : जनवरी 2002

## एकटा अकर्मक कविता

बहुत दिनसँ चाहैत छी किछु करी  
बहुत दिन बीति मेल सोचऽमे  
ई करी कि ओ करी  
एना करी कि ओना करी  
कोना करी कि सबसँ ऊपर रही

आब सोचैत छी  
एतेक नहि सोचितहुँ तऽ नीक छल  
किछु करिते रहब ठीक छल

ओना तऽ आइ  
अकर्मको करा दैत छैक अर्थ-बोध  
-ज्ञान-विस्तार  
-प्रभाव-वृद्धि  
बढ़ा दैत छैक मोल  
दैत छैक समृद्धि

ई भाव अथवा विचार  
कोनो दार्शनिक  
अथवा कोनो दीर्घसूत्री केर भऽ सकैत अछि  
अथवा भऽ सकैत अछि ई गहन निराशाक परिणाम  
अथवा कोनो अपाहिजक पश्चातापसँ  
भेल हो ई उत्पन्न  
अथवा भऽ सकैत अछि  
कोनो पराजित आत्मा  
एही सोचसँ कऽ रहल हो आत्मतर्पण

लोक कहैत अछि  
कोनो बात सोचने-विचारने बिना नहि करी  
ई तऽ नीक बात  
किन्तु एतेक सोचबो नहि नीक  
जे निष्क्रियता विचार पर पसरि जाइ  
आ समस्या मुँह बाबि  
'कारगिल' जकाँ भऽ जाइ ठाढ़



अथवा जा धरि अहाँ पनही जोही  
सौंसे मिथिलाकेँ गोति दैक बाढ़ि

एकर अर्थ ई नहि  
जे अहाँ हड़बड़ा कऽ पहिरि ली पनही  
केहनो परिस्थितिमे पयर आ पनही केर  
नजदीकी सम्बन्धकेँ नहि बिसरबाक चाही  
पयर भले अड़ांची अथवा माथ पर राखल रहय  
पनही सदैव हाथमे राखी

एहि आपातकालीन अस्त्रसँ  
सूतलो-सूतल भऽ जाइत आत्मरक्षा, सीमा-सुरक्षा  
भऽ जाइत बचाव डकैती-हत्या/बलात्कारसँ  
सुधरि जाइत देश-विदेशसँ सम्बन्ध  
हारि गेलाक बादो  
भेटि जाइत बहाना हाथ बाझल रहबाक

निन्न लोककेँ आश्वस्तिये नहि  
आत्मविश्वासो दैत छैक  
विकट-सँ-विकट समस्या केर कऽ दैत छैक समाधान  
सूतल रहऽ वला लोक  
जा धरि टीसन पहुँचैत अछि  
जा चुकल रहैत छैक गाड़ी  
आ ओ लूटि, दुर्घटना बम-विस्फोटसँ बचि जाइत अछि  
-विधानसभा आ संसदक जुता-जुतौअलिसँ  
बचा लैत अछि अपन माथ

आदमीकेँ अपन सुरक्षा लेल  
पुलिसक जीप पर नहि  
अपनहि निन्न पर निर्भर रहबाक चाही  
निन्नहिमे जोहबाक चाही  
सभ वैश्विक समस्याक राष्ट्रीय समाधान  
ओना तऽ अहाँ बुझिते छी  
सभ करैत छथि भगवान □

भारती मंडन : जनवरी-सितम्बर 2000

धोधरिसँ हुलकी मारैत करुणा

एहि असंख्य धोधरिवला  
प्राणशून्य, श्वेतांग महावृक्षक अन्तः प्रकोष्ठमे  
वास करैत अछि विकसित आ अविकसित  
छोट आ पैघ हाथ-पयर वला आ लुलह-नांगड़  
कुदकऽवला आ सोझे झपट्टा मारऽवला  
अनेकानेक थलचर आ नभचर

सभकेँ बूझल छैक  
एहि महावृक्षक अतीत आ वर्तमान  
सभकेँ देखल छैक एकर  
भविष्य पर लागल पूर्णविराम

कियैक भऽ गेल छैक एकर हृदय  
एतेक प्रशस्त आ प्रबुद्ध  
किएक अपनाकेँ बोधिवृक्ष घोषित कए  
ई जोहबा रहल अछि कोनो सिद्धार्थ  
ककरोसँ नहि छैक अज्ञात

एकर शीतल छाया  
सभ दिन बाँटैत रहल छलैक चिरनिद्रा  
एकर डारि, एकर फऽड़, एकर पात  
सभ दिन करैत छलैक विष-साव  
तथापि एकर चारुकात  
होइत रहैत छलैक ठेलम-ठेल  
देखऽ लेल सांप आ बिज्जीक खेल

आब जखन कि डारि पात छाल छाया  
सभ एकरा देने छैक छोड़ि  
विष गेल छैक सुखा  
एकरामे जागल छैक जीवमात्रक लेल दया  
सड़ि-सड़ि कए धोधरि भऽ गेल एकर हृदयसँ  
हुलकी मारैत रहैत छैक क्रूरताक बदलामे करुणा □

समय-साल : जून-जुलाई 2002



## रिनियाकेर नीर

जे अघटनीय छल  
घटल  
पौरुषक प्राचीर  
रेतक भीत जकाँ  
ढहल

ई कुहेस सहजहि छटऽवला नहि अछि  
अहाँ कखन धरि करब  
सूर्यक उगबाक प्रतीक्षा  
कतेक करब मित्रमंडलसँ रोशनीक याचना  
कहिया धरि झुकौने रहब माथ  
सहैत रहब यातना

उद्,  
मलबामे जोहू लहास  
के सभ छथि बाँचल ?  
के भेलाह हमला केर ग्रास ?  
ऐश्वर्यक मनगोआरिक सभ टांग  
कोम्हर जाकऽ फँसल ?  
शीर्य-सीधक कलश  
कोम्हर जा कऽ धसल ?

हम सभ छी अहाँ केर रिनिया  
सेवामे हाजिर रहऽवला लोक  
दुखक एहि बेरमे  
स्वीकार कैल जाय  
हमरो सभक नीर □

रचनाकाल : 09 नवम्बर 2002

## गुड़ियाक संग गुड़िया जकाँ खेलाइत

ओ आयलि  
हमर आंगुर पकड़ि  
कोनो अनजान देशक  
अज्ञात जंगलमे लऽ गेलि

ओतय बहुत रास चिड़ै-चुनमुनी  
कौआ-मैना देखीलक  
आ केम्हरो ससरि गेलि  
हम भुतिआयल बच्चा जकाँ अनभुआर जंगलमे  
अपरिचित जीव-जन्तु पशु-पक्षी केँ देखैत छी  
आ डेरा कऽ गुड़िया-गुड़िया रटऽ लगैत छी  
किन्तु ओ नहि अवैत अछि  
तकर बाद हमरा की भेल  
से नहि जनैत छी

बड़ी कालक बाद  
हमरा होस अवैत अछि  
देखैत छी  
ओ सौँसे देहकेँ हँसोथि रहलि अछि  
हमर माथकेँ कोरमे राखि  
की-कहाँदन गाबि  
हमरा पोदि रहलि अछि

हम बिसरि जाइत छी जे ओ हमरा  
एतय छोड़ि कतहु पड़ा गेलि छलि  
अथवा ओ ई स्थान नहि अछि  
जतय रोज हमरा  
छड़ी पकड़ि लऽ जाइत छलि

हम पहिने कौआ-कऽर मैना-कऽर खाइत छी  
आ गुड़ियाक संग  
कोनो गुड़िया जकाँ  
खेलऽ लगैत छी □

घर बाहर : अप्रैल-जून 2003



## ओ जनमि गेल छथि

जगदा बाबू कहलनि  
अहाँ जिनका जोहि रहल छियनि  
ओ जनमि गेल छथि

नीक कुल नीक परिवेश नीक ग्रह-नक्षत्रमे  
भेल छनि हुनक जन्म  
मुदा कतय, कोन गाम अथवा कोन देशमे  
से हमरा नहि बूझल अछि  
हम एतबा धरि कहि सकैत छी  
ओ अहाँकेँ भेटताह अवश्य

हमरा भेल  
ओ अथाहमे टेलि सागर-मंथन करऽ कहि रहल छथि

प्रकटतः कहलियनि  
हम नोनछर समुद्रक कातमे रहैत छी  
बहुत रास जीवजन्तु, मत्स्य, कूर्म, वराहसँ  
प्रायः रोज होइत अछि साक्षात्कार  
सभ बुझाइत छथि प्रबल प्रतापी  
कोना बूझल जाय जे ओहिमे के छथि अवतारी

ओ कहलनि  
नहि-नहि अहाँकेँ किछु बुझबाक नहि अछि  
मात्र अन्वेषणमे लागल रहबाक अछि

हम माथक घाम पोछि  
हुनका हाथ जोड़ैत छियनि  
आ यात्रा पर बहरा जाइत छी

आगँ छल जनसमुद्र उमड़ल  
धक्कम-धक्कामे एम्हरसँ ओम्हर फेंकाइ लगैत छी

हमरा तलमलाइत देखि  
केओ अपन हाथ पकड़ाबैत छथि  
आ भीड़सँ बाहर लऽ आनैत छथि  
हमरा प्रकृतिस्थ होइत देखि  
ओ आगू बढ़ि जाइत छथि

हम कृतज्ञता एवं विस्मयसँ भरि  
सोचऽ लगैत छी  
की ओ वैह तऽ नहि छलाह  
जिनका हम जोहि रहल छलियनि  
आ कि वैह  
सात समुद्र पार कए  
हमरा जोहऽ लेल  
ओहि जन-समुद्रमे प्रवेश कऽ गेल रहथि □  
रचनाकाल : 5 सितम्बर 2003



## उत्तरआधुनिक कारुणिक

प्रशिक्षण पावि ओ भऽ गेल छथि  
अश्रु बहयबाक कलामे प्रवीण  
कतय कोना कतेक बुन्न खसयबाक चाही  
एहिमे भऽ गेल छथि धुरीण

आतिथेयक दर्जा देखि  
तय करैत छथि शोकाचार  
घटबैत-बढ़बैत रहैत छथि संवेदनाक अनुपात  
स्थान काल पात्रक अनुसार  
अपन कूटनीतिक विलापसँ  
ओ गुंजित कैने रहैत छथि सार्क आ न्यूयार्क

हमरा झूझ छी सोझ  
दहो-बहो कानऽ बला लोक  
कानिते रहैत छी सदिखन  
हरदम व्यापने रहैत अछि शोक

कहियो भोपाल, कहियो गोधरा-गुजरात  
आइ अफगानिस्तान तऽ कालिह इराक  
कैने रहैत अछि उद्वेलित  
होइत रहैत छी अनेरे करुणार्द्र

हुनका लेल कारुणिकता छनि उत्तर आधुनिक व्यापार  
सम्बन्ध संवेदना सहानुभूति मात्र लोकाचार  
हमरा सभक दुःखोदधिमे कतेक अछि नोन  
कतेक अछि पानि  
ताहि पर करैत रहैत छथि विमर्श  
राखैत छथि हिसाब  
तर्क करैत छनि सम्मोहित  
क्षुब्ध करैत छनि भाव □

रचनाकाल : 11 सितम्बर 2003

## साइबर कैफे

हम विश्वग्रामक एहि 'साइबर कैफे' मे बैसल  
अपन हाथ आ पयरक आंगुरिकें  
दौड़बैत छी  
कोनो संगति, कोनो संगीत  
कोनो तूफान, कोनो भूमिकम्पक लय पर  
प्रसन्न-पुलकित होइत  
तनाओ-शिथिल भऽ  
झपकी लियऽ लगैत छी  
देखऽ लगैत छी 'रिमोट'- संचालित स्वप्न

-शस्य-श्यामला धरती  
-भरल खरिहान  
-आ भराइत कोठी

होइत अछि  
कतेक धन-धान्यपूर्ण  
कतेक भव्य  
कतेक आधुनिक  
भऽ गेल हमर चओर आ गाम  
अपन मड़ैया  
अपन गछुली  
जे प्रायः रहैत छल उजड़ल  
भऽ गेल केहन अभिराम

एतबेमे निर्धारित समय  
भऽ जाइत अछि शेष  
स्वप्नक बचलाहा अंश  
देखब अगिला खेप □

रचनाकाल : 10 अगस्त 2003



## ढेहिआएल क्षणमे

ओ हमरा रोज भेंट दैत छथि  
कुशल-समाचारक बाद  
कविता पर उतरि जाइत छथि  
हमहुँ शिष्टाचारवश हँ-हँ कहैत  
फेर कहियो कहि आगँ बढ़ि जाइत छी

हुनक आग्रह आ हमर 'फेर कहियो' केर  
निरन्तरता  
सिंचित करैत रहैत अछि  
प्रातः भ्रमणवला रस्ताक कातमे लागल  
ओहि गाछकेँ  
जकर छायामे  
घुरैत काल  
हम दूनू टाढ़ भए  
घाम सुखाबैत छी

ढेहिआएल क्षणमे  
हमरा नीक लगैत अछि  
'हाय' 'हलो' केर अंतरंग भऽ जायब  
पसेनासँ भीजल शरीर पर  
अहेतुक मैत्रीक  
सिहकी बहि जायब □

रचनाकाल : 10 सितम्बर 2003

## हवाक विरोधमे

सिमानक अतिक्रमण कऽ ओहि पारसँ  
हुहुआ कऽ अबैत अछि हवा  
एहि पार शुरू भऽ जाइत अछि हुआ-हुआ  
सन्निपाती प्रलाप-  
भेल विश्वासघात/भेल विश्वासघात  
धोखा दऽ कैल गेल संहार  
सौँसे परोपट्टा निनादित होमय लगैत अछि एहि सोर सँ

प्रभातीक समयमे बाजैत अछि साइरन  
सभतरि अदक पैसि जाइत अछि  
गुप्तचरी पर तैनात चिड़ै सभ पर खसैत छैक वज्र  
चिं-चिं चूँ-चूँ काँव-काँवक मध्य  
कैल जाइछ संकटकालीन बैसक  
आपातकालीन घोषणा

कौआ चिलहोड़ि गिद्ध बाज  
सभकेँ एकजुट कएल जाइत अछि  
आक्रमणकारी हवाक विरुद्ध पारित होइत अछि  
निन्दा-प्रस्ताव  
पवन दूतावास पर विरोध-प्रदर्शन आ धरनाक लेल  
शुरू भऽ जाइत अछि तैयारी

हमरो निन्न टूटैत अछि  
आँखि मलैत छी, मलिते रहैत छी  
बिसबिस्सी सोचऽ नहि दैत अछि  
एहि पारक गैस छल बेसी कडुआह  
आ कि ओहि पारक ई हवा  
मोनकेँ जाँतने रहैत अछि



हम आक्रोशसँ भरि उठैत छी  
पजरऽ लगैत अछि सौँसे शरीर  
उफनऽ लगैत अछि विचार  
जगजगा जाइत अछि भरहन्ना  
भरऽ लगैत अछि अखबारक पन्ना

नहुँ-नहुँ  
हम अपन एहि व्यक्तिगत संकटकें  
बना दैत छी वैश्विक चिन्ताक विषय  
पक्षमे ठाढ़ होइत छथि किछु लोक  
होअए लगैत अछि हवाक ग्लोबल विरोध □  
भारती मंडन : जनवरी-सितम्बर 2002

## इयोढक माछ

भाइ,  
एखन रातिक तीन बाजल अछि  
अर्थात जड़कालमे  
एखन भिनसर होयबामे  
तीन घंटा बाकी अछि

उठि कए बैसि गेल छी कुर्सी पर  
आ टेबुल पर हाथ राखि  
करऽ चाहैत छी अपन ध्यानकें केन्द्रित  
किछु लिखऽक लेल  
मुदा ओ चलि जाइत अछि अहाँ पर  
बहुत दिनसँ अहाँकें नहि लिखि सकलहुँ अछि  
सोचैत छी  
बैसाड़ीमे कियैक नहि काटि ली कलिका  
लिखि दी पत्र  
माडि ली विलम्बक लेल क्षमा

नजरि पड़ैत अछि  
कतेक दिनसँ पड़ल अहाँक नाम-पता लिखल  
तड़फड़ाइत पोस्टकार्ड पर  
चाहैत छी पठा दी एही प्रतीक्षारत समदियाकें इयोढ़  
लागि आबऽ अहाँ सभकें गोड़  
कहि आबऽ अहाँक पोखरिक माछक स्वाद  
कऽ आबऽ रोहुक जोगाड़

मुदा होइत अछि  
की कहतीह मित्र-पत्नी  
सोचतीह दिनभरि तऽ लिखते रहैत छथि झूठ-साँच  
ब्रह्मवेलोमे मोन पड़ैत छनि माछ

भाइ  
एहि पोस्टकार्डक कपारे छैक टेढ़  
एहु बेर बिन लिखले रहि गेल। □  
रचनाकाल : 14 जनवरी 2004



## वाणी केर वध

हम कहऽ चाहैत छी  
मुदा कहि नहि पबैत छी  
एहि लेल नहि जे सुनत के  
अथवा  
जे कान सूनऽ वला छल  
पाथर भऽ गेल ।

कहब हमर धर्म आ कर्म दुनू अछि  
किन्तु जे हम कहैत छी  
लोकक दृष्टिमे ओ कविता भऽ जाइत अछि  
आ कविता बाजार-भाव घटबैत छैक  
राष्ट्रीय संकट बढ़बैत छैक  
रोकि दैत छैक देशक निलामी  
बढ़बैत छैक भितरिया बात कहि बदनामी  
देखबैत छैक अधिष्ठाताकेँ  
प्रतिवादमे तनल मुड़ी  
सुनगा दैत छैक आक्रोशक भड़ी

देशहितमे  
बहुमतसँ  
तय भेल अछि  
वाणी केर वध  
हम छी स्तब्ध □

रचनाकाल : 01 जनवरी 2004

## सहचरी

हम ओकरा लऽ कए  
यात्रा पर बहराइत छी  
लोक टोकैत अछि-  
अहाँ जकरा बनीलहुँ अछि सहचरी  
ओकर नीक नहि  
रंग-ढंग  
एककेँ पड़ाव दिस बढ़ा कए  
भऽ जाइत छैक  
दोसर केर संग

हम चाहैत छी  
हमरा पड़ाव नहि भेटय  
ई अनन्त भतरी हमरा नहि छोड़य  
हमर यात्रा केर होअए नहि अंत  
भोतिआइ नहि दिअए ई  
दैत रहय संग □

रचनाकाल : 17 जनवरी 2004



## जाड़क रौद

जाड़ भरि हम रौदक प्रतीक्षा करैत छी  
गरमीमे  
जोहने फिरैत छी छाहरि

एहि उत्तराभिमुख सौभद्र निवासमे  
पिता सभ सुविधा जुटा गेल छथि  
अपन संतानक लेल  
जाड़क रौद छोड़ि कऽ

हमरा सन अबदंगाहक लेल  
किछु बेसिये चिन्ता रहैत छलनि  
होइत रहनि  
एकरा लेल जिनगी चलाएब  
भऽ जयतैक कठिन  
कटतैक नहि दिन

सभासद हुनका करैत रहथिन आश्वस्त  
हमरा सभक रहैत  
हिनका नहि हेतनि कष्ट  
अनुभव नहि करऽ देबनि  
अपनेक अभाव  
होइत रहतनि निर्वाह

हम पिताक चिन्ता-सदाशयतासँ  
रही नहि अपरिचित  
किन्तु अपन व्यवहारसँ कऽ नहि सकलियनि आश्वस्त  
जाधरि रहथि जीवित

आब जखन ओ नहि छथि  
उत्पन्न रहैत अछि ई सौध  
हम जोहने फिरैत छी छाहरि  
पिता जकाँ स्नेहिल उष्मा दिअऽ वला  
जाड़क रौद □

रचनाकाल : 11 दिसम्बर 1999

आदमीकें जोहैत/74

## कामनाक अर्ज

अहाँ जखन मंच पर चढ़ैत छी  
हाथ फेकि भाषण करैत छी  
लोक बजबैत अछि ताली  
हम अपन माथ ठोकैत छी

देखल अछि सिनूरक गति  
चिन्ता अछि चूड़ीक प्रति  
आधा छी बाँचल  
अहाँ तकरो फोड़ैत छी

अहाँक परिवर्तित रूपसँ  
पहिने छल होइत आहत  
सीन्दर्य-बोध  
वाचाल सुन्दरता उड़ा दैत छल  
रूप-चेतनाक होस  
आब रहैत अछि  
मात्र प्रतीक-रक्षाक चिन्ता  
जतबे छी ततबो रही एतबे सिंहन्ता  
कहुना अहाँक सङ नहि छूटय  
मड़बा पर बान्हल गेंठ  
एहिना नहि फूजय  
अहाँक बनल रहय आसन  
हमरो भेटैत रहय अरगासन  
विसरल रही  
अपन दुख-दर्द  
जीवनक सतरंजीकें  
भेटैत रहय  
अहाँक पाद-स्पर्श  
आओर नहि छोट हो  
कामनाक अर्ज □

रचनाकाल : 16 अप्रैल 2003

आदमीकें जोहैत/75



## ओकरा रहैक समय

ओकरा रहैक समय  
जे खेतसँ बाढ़िक पानि निकलि जयबा धरि  
खाद आ बीआ नैने ठाढ़ रहि सकय

ओकरा रहैक समय  
जे दू-दू फसिल नष्ट भऽ जयबाक बादो  
तेसरक प्रतीक्षा कऽ सकय

ओकरा रहैक समय  
मुदा ओकर बेटीकेँ रहैक  
सचेष्ट भऽ जयबाक बेगरता  
बेटाकेँ रहैक हथिआर उठयबाक धड़फड़ी  
बापकेँ रहैक परलोक जयबाक हड़बड़ी

ओकरा रहैक समय  
सालक आरम्भ वा अंतक  
नहि रहैक ज्ञान  
पुस्त-दर-पुस्त सूदि चुकयलाक बादो  
मूलक नहि रहैक ध्यान

ओकरा रहैक समय  
ने रहैक भरना लागल जिनगीकेँ छोड़यबाक जल्दी  
ने बेगारी केर भय □

रचनाकाल : 17 जुलाई 2003

## हमरा अछि चिन्ता

सुनू हमलावर  
अहाँ जाहि गामकेँ  
जरा कए आएल छी  
ओहिमे हमरो छल घर  
गरदनि जकर रेति कए आयल रही  
छलाह हमरे वंशधर  
लहका कए आयल रही  
जाहि कागत किताबक अल्मारी  
छल हमर सर्वस्व

बस्ती तऽ एहिना उजड़ैत छैक  
बसैत छैक  
फेर-फेर जनम लैत छैक  
इदरिस बलभदर सेमुअल करतार  
फेर-फेर शुरू होइत छैक  
बरहमासा मल्हार

हमरा अछि चिन्ता  
अहाँ कोना बाँचब  
अपन छोट सन आस्तीनमे  
एतेक साँप कोना राखब  
कोना करत अहाँक बचाओ  
ई भूर वला नाओ  
हे हमर हथिआरबन्द बेटा  
हे हमर विस्फोटप्रिय बाउ □

रचनाकाल : 10 फरवरी 2004



## मिथिलासँ बाहर मिथिला

‘मैनहट्टन’क बैटरी पार्कमे बैसल रही  
देखि रहल छलहुँ  
सुलम्ब श्याम\* बन्धु सभकेँ निर्द्वन्द्व घूमैत  
सुगठित सुदर्शना श्यामा\* सभकेँ सिकरेट धूकैत

होइत छल एकटा हमहुँ सुनगा लितहुँ  
देखतियैक  
भारतीय धुआँ दक्षिण अफ्रीकी धुआँक संग मिलिकए  
भऽ जाइत छैक कतेक प्रगाढ़

भेल एखन धरि नहि गेल अछि हमर  
उपनिवेशी प्रजा वला संस्कार  
एहि सम्पन्न देशमे आबियो कए  
मुँहसँ बहार करऽ चाहैत छी दरिद्राक भाष

रहि-रहि कऽ फूकैत अछि रंगभेदक धाह  
एहिसँ तऽ नीक छल  
चलि जयतहुँ बंगलादेश  
चलि जयतहुँ नेपाल  
आओर नहि तऽ मालदीप जाकेँ मारितहुँ माछ  
अथवा मोरिशसमे चुनितहुँ छोट

एतबेमे आबि गेलीह पुत्रवधू  
कहलनि बाबूजी, एतयसँ चलबाक अछि ‘योंकर्स’  
उदयन मामा करैत हैताह प्रतीक्षा  
माय तरैत हैतीह माछ

हमरा मोन पड़ि गेल सहरसा सतलखा बड़गाम  
मोन पड़लाह समधि-समधिन, हुनक स्वजन-सखा  
मोन पड़ल मिथिलाक सासुर-समधिआउर  
पाहुनक आगाँमे लागऽ वला सचार

आदमीकेँ जोहैत/78

गद्गद् होइत कहलियनि- गाड़ी लऽ आउ  
कोम्हर गेल अजय  
कोम्हर गेलीह अहाँक सासु

पहुँचलहुँ ‘योंकर्स’  
लागलहुँ दरबज्जा  
मुग्ध भेलहुँ देखि डा. यू.के. पाटकक परिसरक साज-सज्जा  
स्वागतमे अगुअयलाह किछु मैथिल  
किछु अमैथिल  
किछु देशी, किछु विदेशी  
भेल ‘हलो-हाय’  
कॉफी आ चाय

हम चाहैत रही  
बेटाक बाप बला गंभीरताक संग  
बैसल रही सोफा पर, चिबबैत रही पान  
टोकला पर ‘हँ-न’ मे दैत रही उत्तर  
अपन कौतुक-प्रिय कवि केर धयने रही टांग

मुदा से सभ कहाँ भऽ सकल  
भऽ गेलहुँ ठाढ़  
देखऽ लगलहुँ  
डायनिंग टेबुलक व्यंजन-विन्यास

विचलित कऽ देलक सभ संकल्पकेँ  
माछ-भात-तरुआ  
बड़ी-बड़ा-चर्चरी आ ‘शिमला’ केर भरुआ  
खीर-सकरौरी पर चल गेल ध्यान  
भेल कोना आबि गेल मिथिला एहिठाम  
कोना ‘कन्टीनेंटल डिश’ वला एहि देशमे रहियो कए  
मैथिलक मोन पर  
रहैत छनि तिलकोर लतरल  
मिथिलासँ बाहर आबि  
मिथिला कोना पसरल □

रचनाकाल : न्यूयार्क, 11 जुलाई 2002

\* दक्षिणी अफ्रीकी अश्वेत

आदमीकेँ जोहैत/79



## यू.एन.ओ.मे यात्रीजीकें स्मरण करैत

'न्यूयार्क हार्वर'क 'लिबर्टी'-द्वीपक लेल विदा होइत छी  
दूरहिसँ देखाइ पड़ैत अछि  
मुक्ति-शक्ति-स्वतंत्रताक अधिष्ठात्री  
मसाल-हस्ता देवी लिबर्टीक गगनचुम्बी प्रतिमा  
मुहँसँ बहराइत अछि - 'दोहाइ हे लिबर्टी मैया'

पत्नी टोकैत छथि  
एतहुँ अहाँ लऽ अनलियनि यात्रीजीकें  
मास्कोकें मोड़ि देलियैक वाशिंगटन दिस  
'पर्सियन गल्फ'कें गोंति देलियैक 'एटलांटिक'मे

नहि-नहि हुनके प्रेरणासँ  
हम आयल छी एहि वैभव-विभ्रान्त देशमे  
अपन अरबा-चाउर-बतासा 'लेडी लिबर्टी'कें चढ़ाबऽक लेल  
बिता आबऽ राति  
'जेक्सन हाईट'क एशियन बन्धुक संग  
'टाइम्स स्क्वायर', 'फिफथ एवेन्यू'मे  
कऽ आबऽ 'एटलांटिक'मे स्नान  
खा आबऽ 'लिटिल इण्डिया'सँ पान

हम पहुँचैत छी संयुक्त राष्ट्रसंघ  
देखैत छी 'शो-केस'मे यात्रीजीकें बन्न  
करैत एकसरे सौंसे एशियाक दारिद्र्यक प्रतिनिधित्व  
पोछैत एब्राहम लिंकन केर नोर  
पाड़ैत मार्टिन किंग लूथरकें सोर  
देखैत 'ट्रिवन-टावर'क सारा, बहबैत करुणाक धारा

हम ध्यानमगन रहि जयतहुँ नहि जानि कतेक काल  
मुदा पत्नी आबि कहलनि-  
खलिया 'शो-केस'मे की देखि रहल छियैक  
बाहरमे कखनसँ अजय अछि ठाढ़ □

रचनाकाल : न्यूयार्क, 11 जुलाई 2002



आधुनिक मिथिलाक जीवनकें  
कवि कीर्तिनारायण मिश्र आत्मीय आ  
भावनात्मक स्पर्श दैत छथि आ तकरा  
काव्य-प्रतिमानमे बारि अभिव्यक्तिक  
सम्प्रीक चित्र खिंचैत छथि। ई सम्प्रीक  
हुनक विशाल पाठक-वर्गकें हुनक कविता  
सँ सँवति जोड़ने-बान्हने रहैत छनि।

मनुष्यक जीवन लेल घातक  
कोमो पाखंड, छल-प्रपंच आ षड्यंत्रकें  
ओ हरेक स्तर पर अस्वीकार करैत आम  
जनजीवनक लेल एक नव मानक केर  
स्थापना लेल जोर दैत छथि। सुदीर्घ  
काव्यानुभवसँ भरल ओ विपुल-सृजन  
कइ सकलाह अछि आ कविताकें एक  
समयानल आ लेश घरातल प्रदान करबा  
मे सकल भेलाह अछि।

जीवनक छोट-छोट चीजकें ओ  
अपन गहन काव्यात्मक दृष्टिये देखलनि  
अछि आ तकरा अभिव्यक्त कए आबय  
वला पीढ़ी लेल एक स्वरथ-सृजनोन्मुख  
परम्पराक स्थापना कयलनि अछि। हुनक  
कविता आ काव्य-विषयक विविधता,  
हुनक तलस्पर्शी जीवन-बोध, हुनक  
अनुभवसम्पन्नता मैथिली कविताकें  
बहुलायामी आ धारदार बनौलक अछि।  
नव सँ नव आ महत्वपूर्ण प्रयोग कए ओ  
अपन काव्यात्मक-उत्कर्ष प्राप्त करबामे  
सक्षम रहलाह अछि।

लौदार लालन